ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश



वार्षिक शुल्क :- रु. 50 (भारतवर्ष में), रु 500 (विदेश में)

15 अगस्त 2005
वर्ष 25 अंक 10

भक्ति सद्गुरू टेऊँराम अमृतवाणी

भक्ति नौ प्रकार की होती है



दोहा: श्रवण, स्मरण, कीर्तन, पद सेवन भगवान ।
अर्चन, वन्दन, दास्य रति, सख्य, समर्पण जान ।।

राग पीला भजन

टेक : श्रद्धा मन में धार, नवधा भक्ति करो ।।

१. श्रवण भक्ति परीक्षित कीनी, कीर्तन में शुक की मति भीनी । त्यों तुम कर सद्वार ।।
२. सुमरन भक्त प्रहलाद ने कीया, पद सेवन लक्ष्मी चित्त दीया । त्यों तुम करो उदार ।।
३. अर्चन भक्ति पृथू ने धारी, वन्दन की अक्रूर प्यारी । त्यों तुम कर हरबार ।।
४. दासी भक्ति कीन हनुमाना, सखा भक्ति पार्थ प्रधाना । त्यों हरि से कर प्यार ।।
५. आतम अर्पन कर बलि राजा, कहे टेऊँ पाया रघुराजा । त्यों तुम पा दीदार ।।

सद्गुरू शान्तिप्रकाश प्रकटोत्सव

शुक्रवार
19 अगस्त 2005



मन अशान्त को शान्त कर, तम का करने नाश ।
जन्म धार संसार में, आए शान्ति प्रकाश ।।

1. श्रवण भक्ति :- महाराज शुकदेव जी से राजा परीक्षित ने श्रीमद्भागवतपुराण की कथा सुनकर सात दिनों में मुक्ति प्राप्त की ।
2. स्मरण भक्ति :- प्रह्लाद भक्त और ध्रुव भक्त ने की है ।
3. कीर्तन भक्ति :- शुकदेव जी महाराज ने की है ।
4. पाद-सेवन :- लक्ष्मी जी कर रही हैं ।
5. अर्चन भक्ति :- राजा पृथु ने की है ।
6. वन्दन भक्ति :- अक्रूर ने द्वापुर में की है ।
7. दास्य भक्ति :- श्री हनुमान जी ने भगवान रामचन्द्रजी की सेवा कर की है।
8. सख्य भक्ति :- अर्जुन ने की है ।
9. समर्पण भक्ति :- राजा बलि ने की है ।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में

सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का 109 वाँ जन्मोत्सव

बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2005 तक

गंगा स्नान सत्संग पुनि–संतों का दर्शन । कह टेऊँ आ सेवके–करिये मन प्रसन्न ।।

समस्त सन्त-महात्मा-सज्जनों को सूचित किया जाता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य ब्रह्मश्रोत्रिय-ब्रह्मनेष्ठी योगीराज श्री 1008 सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की छत्रछाया में प्रेम प्रकाश मण्डल के त्याग तपस्या की साक्षात्मूर्ति सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 109वाँ जन्मोत्सव श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2005 (सिन्धी तारीख 8 से 12 अश्विन संवत् 2062) तक प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार में धूमधाम से मनाया जायेगा. आप सब इस जन्मोत्सव में आकर महापुरुषों की गुणगाथा को श्रवण करके मानव जीवन को कृतार्थ करें.

कार्यक्रम

12 अक्टूबर, बुधवार	प्रातः	7 से 8 सत्संग, 8 से 9 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवत्गीता के पाठ आरम्भ, 9–10 हवन, 10 बजे प्रेम प्रकाश ध्वज वन्दना, आरोहरण.
	सायं	3 बजे शोभा यात्रा एवं 7 से 8 सत्संग.
13 अक्टूबर, गुरूवार से 15 अक्टूबर, शनिवार तक	प्रातः	7 से 11 एवं सायं 4 से 8 सत्संग.
16 अक्टूबर, रविवार	प्रातः	6 बजे गुरू पूजा, पोशाक पहरान, भोग आदि. 7 से 11 सत्संग, पाठों का पारायण व सन्त समागम
	सायं	4 से 8 सत्संग, दीप प्रज्वलन, पल्लव, उत्सव का समापन

शोभा यात्रा मार्गः प्रेम प्रकाश आश्रम से खड़खड़ी, भीमगोड़ा, स्वामी टेऊँराम चौक, हरि की पौड़ी पर समाप्त.

नोट

1. सभी यात्री सर्दी योग्य बिस्तर, ताला, टार्च एवं गिलास जरूर लावें.
2. सोना, गहना व कीमती सामान साथ न लाएं.
3. कोई भी माता बहिन अपने पिता, भाई व पुरुष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें.

पता
सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज
प्रेम प्रकाश आश्रम
भूपतवाला, हरिद्वार–249410
फोनः 0091.1334.260144. 260815
website: wwwpremprakashpanth.com

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका



प्रेम प्रकाश संदेश

15 अगस्त 2005 वर्ष 25 अंक 10

मंगल आशीष

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण–मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए–	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए–	140 रू.	1400 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए .

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :– व्यवस्थापक :– कार्यालय–प्रेम प्रकाश संदेश,प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर–474001
फोन:0751–5045144 सांय 4 से 8 बजे तक, शेष समय 2454183 फैक्स:0751.5045144
e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.com

अनुक्रम

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रात: ८ से १२ बजे तक व प्रति शनिवार सांय ५ से ८ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी जी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

शुभ स्थल : श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

चैत्र मेला 1990

परमात्मा से हमारा असली सम्बंध है

।। राग जोग भजन ।।

सूत्रः हरी- मैं तेरा हूं तेरा ।। टेक ।।
१. तन मन तेरा धनभी तेरा, बल बुद्धि वाणी तेरी ।
जो कुछ है सो सबहीं तेरा, न कछु इसमें मेरा ।।
२. तुमहो मालिक मैं हूं मिलिक्यत,हरदमहूं वश तेरे ।
जो जो काज कराओ मुझसे, सोय करुं बन चेरा ।।
३. तुम हो नटवर मैं हूं पुतली, हुक्म डोर में बांधे ।
जैसे नाच नचाना चाहो, तैसे देवूं फेरा ।।
४. तुम हो चित्र बनाने वाले, मैं हूं चित्र तुम्हारा ।
नाम रुप यश रंग ढंग यह, सब कछु हरि तो केरा ।।
५. आप अंगी मैं अंगहूं तेरा, अलग सत्ता नहिं मेरी।
कहे टेऊँ मैं कहने मात्र, सब तूं है मैं हेरा ।।

प्रेमियों आपको बहुत खुशी होगी जो सुबह से लेकर अभी तक आप अमृत पान कर रहे हो. नाना प्रकार के उपदेश और सिख्या सुन रहे हो. मन में शांति व आनंद प्राप्त कर रहे हो. यह आपके पुण्यों का फल है. आपके सत्कर्मों का फल है. इसलिये आपको धन्यवाद है. यह सब कृपा किसकी है. गुरु महाराज की, प्रेम से बोलो-धन गुरु टेऊँराम ! धन गुरु सर्वानन्द ! आओ अब सभी प्रेम से ऐसे बोलो- भजन :- हरी मैं तेरा हूं तेरा !

एक बात आप न जब तलक अपने घर में थे तो आप अपनी पत्नी के थे. अपने बच्चो के थे. अपने कारोंबारों के थे. अब जब से यहाँ आये हो तो ऐसे समझो मैं गुरुदेव का हूं. ईश्वर का हूं. इसलिये प्रेम से बोलना. श्रद्धा से कहना कह करा के फिर भाग मत जाना.

एक जगह मेरा जाना हुआ किसी मंदिर में. एक महीना वहां पर रहे. यह सिंध की बात है. तो एक दिन उस मंदिर वालों ने कहा कि भाई अपील करो कि मंदिर की एक दिवाल टूटी हुई है वो बन जाये. तो मैंने कहा कि भाई हमारे गुरु का कहना है कि किसी से अपील नहीं करना. जिन्हों की श्रद्धा होगी वो दे जायेंगे. हमारे से जो बनेगा आपको दे देगें. पर वो रोज कहने लगे-अपील करो, अपील-अपील करो.एक दिन की बात है वो सुनने योग्य है. एक दिन मैं मंदिर में मथा टेकने गया. वहाँ एक को प्रेमी आया. शायद बहुत बड़ा सेठ था. वो कहने लग भगवान को- हे भगवान- मैं तेरा दास हूं. जो कुछ मेरा सो तेरा है. मेरी बिल्डिगें भी तेरी हैं. कारखाने भी तेरे हैं बाल-बच्चे भी तेरे हैं. बाग-बगीचे भी तेरे हैं. जमीन भ तेरी है. मैं भी तेरा हूँ .

ऐसा सुनकर मैं बहुत खुश हुआ मैंने विचा किया कि वो मंदिर वाले कहते हैं कि अपील करो. लेकिन यदि इसी से कहदें कि दिवाल बना दो चूंकि इसके पास भगवान का खूब पैसा है .

तो मैने उस सेठ से कहा आप बहुत उदार हैं आप बड़े दौलतमंद हैं. तो वो कहता है महाराज- मैं कु नहीं सब कुछ भगवान का है मैं कसम खाकर कहता हूं सब कुछ भगवान का है मैं भी भगवान का हूं. मैने सोच यह बड़ा अच्छा हुआ. रात्रि समय हुआ, सभा लगी प्रेम आये. फिर उस मंदिर वालों ने कहना शुरू किया कि महाराज आप अपील करो. तब मैंने कहा अब अपील क क्या जरूरत है. आपको एक ही भगत दे देगा उसी क बुलाया. आया, महाराज क्यों बुलाया. मैने कहा एक का है. कौन सा? यह जो मंदिर है उसी की एक दीवाल टू हुई है. उसी को बनाना है. अब आपसे यह अपेक्षा है कि आप इसे बनवायें. अब वो कहने लगा-स्वामीजी हमा ऊपर क्यों चटी डालते हो, पब्लिक से कहो. फि दाना-दाना इकट्ठा करके बनवाओ .

मैंने कहा- भाई आपके पास जो ईश्वर क खजाना है उसी से बनाओ, आपको अपने पैसों से थोर बनवाना है. स्वामीजी मेरे पास भगवान की एक पाई नहीं है. अरे कल मंदिर में जो आप कह रहे थे-हे प्र खजाना भी तेरा है. कारखाने भी तेरे हैं. सब तेरा है अच्छा- महाराज ऐसे कहा जाता है, दिया थौरई जाता है प्रार्थना में ऐसे कहते हैं. अरे भाई कम से कम परमात्मा

ो ठगी मत करो. इसलिये अब ऐसे कहो .

जन :- हरी में तेरा हूं तेरा.तन मन तेरा, धन भी तेरा,
बल बुद्धि वाणी तेरी.

जो अपनी चीज रहती है वो अपने साथ रहती . यह समझने की बात है. अरे भाई कथनी से करनी अच्छी है. जो अपनी चीज होती है वो अपने साथ रहती . आप जो यहां आये हुये हो अपने शहरों से आप का कान आपके साथ है? घर वाली है? बाल-बच्चे हैं? जो मीन-जायदाद है वो है? अपना गांव है? फिर क्या है ाथ में? अच्छा भगवान है! देखो जो साथ में है वो ही अपना है! अपनी जो चीज है वो अपने से जुदा नहीं होती! ौर जो दूसरे की चीज है वो अपनी नहीं होती. कितना ी जोर लगाओ जो हमारी अपनी नहीं है वो कभी भी अपनी नहीं हो सकती .

जब जो आप यह शरीर छोड़ के जायेगें जो आप े साथ रहता है आगे-पीछे इसे छोड़ना है या साथ ले ायेंगे? परलोक जो जायेंग, क्या इसे साथ ले जायेंगे? यदि ुम्हारा है तो ले जाओ. रुकावट थोरई है. परन्तु हमारा है हीं हम अज्ञानवश भूल में कहते हैं कि ये मेरा है. वास्तव मेरा नहीं. यदि मेरा होता तो हमारे साथ चलता. नहीं लता. कोई भी संसार की चीज अपनी नहीं है. जब आये तब हाथ खाली आये थे जब जायेंगे तब यहाँ की चीजें हाँ ही छोड़ के जायेंगे क्या इन्हे ले जायेंगे? चूंकि अपनी है ी नहीं .

एक बात भगवान अपना है जब आप माता के र्भ में थे तब भगवान तुम्हारे साथ था या नहीं? जब बाहर िकले तब साथ में है या नहीं? अब है या नहीं? जब अपने घर जायेंगे तब वहाँ होंगे या नहीं मरेंगे तो पीछे हेगा या नहीं? अरे भगवान अपना है इसलिये जीव के ाथ है. भगवान को ताकत नहीं जो जीव को छोड़कर जाये ह नासमझी हमारी ही है. जो साथ वाली चीज को दूर मझते हैं. भगवान कभी भी नही छोड़ता वो जीव के साथ ड़ा हुआ है. और जीव को भी ताकत नहीं जो भगवान ो अलग कर दे. जीव से भगवान जुदा नहीं हो सकता और भगवान से जीव जुदा नहीं हो सकता. इसी का अटूट संबंध है. ऐसा जो भगवान है हम उसी को कहते हैं कि हमारे साथ नहीं है. यही तो अकल की कमी है न

एक दूरी वास्तविक होती है दूसरी मानी हुई होती है. जैसे भगवान हमारे से दूर है वास्तव में है साथ, लेकिन ऐसा मानना ये मानी हुई दूरी है. है मानी हुई है. अब भूल अपनी और उलाहना देते हैं. भगवान को. भूल को भुलाने के लिये यहां आये हो. पर वो भूल कैसे निकलेगी ऐसे बोलो- हे हरी मैं तेरा हूं. हरी मैं तेरा हूं तेरा.

एक जगह मेरा जाना हुआ तो प्रेमियों ने कहा-आप कहते हैं कि भगवान साथ में है फिर वो देखने में क्यों नहीं आता? मैंने कहा- अरे भाई जो बात देखने में नहीं आती समझो वो नहीं है क्या? अरे जो साथ में चीज है, अभिन्न वो देखने में नहीं आती. जो भिन्न चीज होती है वही देखने में आती है. अब एक बात बताओ आपको मुख है या नहीं है. वो साथ में है या दूर है? अब उसे देख सकते हो? देखो है या नहीं है हाथ लगाकर देखो. है या नहीं? है. अब यह साथ में है या दूर- साथ में. अभिन्न है, भिन्न है फिर देखने में क्यों नहीं आता? अरे जो अभिन्न चीज होती है वो देखने में नहीं आती वो महसूस होती है! तो ये परमात्मा की सत्ता है परमात्मा की जो चैतन्यता है वो महसूस होती है, देखी नहीं जाती.

अमृतवेला कल्पतरु के समान है

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवा
शुभ स्थल : श्री अमरापुर स्थान, जय
चैत्र मेला 1990 प्रातःकालीन प्रवचन

ओ३मंकारं बिन्दू संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः.
कामदमं मोक्षदम चैव ओउमं काराय नमो नमः..
सर्व स्वरुपं आदि अनूंप भूमि भूपं भयभाना.
अन्त न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धरध्याना.
रहस्यरामं दायक दामं नितनिष्कामं निर्वानी.
पाद नमामं निशदिन शामं श्री टेऊँरामं गुरु ज्ञानी.

स्तुतिः- गोविंद जय-जय गोपाल जय-जय.
राधा रमण हरि गोविन्द जय-जय.

मूल सूत्रः - ।। राग प्रभाती ।।

थलु :- सुबह जो गुरुअ दरि, अचनि जे सुवाली,
गुरुअ जे दया सां, वञनि से न खाली,
१. रखी भेट गुर खे, मथो जे निवाइनि,
कर्ज़ खां छुटनि से, थियनि माला माली.
२. सिदिक साणु जे भी, संभारिनि गुरुअ खे,
गुरु तिनि जी जिति किथि, करे प्रतिपाली.
३. झले पल्लव वेनती, करनि जे गुरुअ खे,
पूरियूं आंसू तिनिजूं, करे जग जो वाली.
४. वठी वचन गुर खां, हृदे जे हंडाइनि,
मिटनि संसा तिनिजा, सुरति थिए सुखाली.
५. कहे टेऊँ कनि जे, सचे गुर जी सेवा,
गुरु दे उन्हनि खे, अन्दर जी उजाली.

महाराज जी कहते हैं, भाई! अमृतवेला में जागकर जो पहले पहले गुरु के दरबार में आता है और गुरुदेव का दर्शन करता है एवम् गुरु महाराज जी के समक्ष अपनी समस्त शुभ प्रार्थना करता है. फिर ऐसे प्रेमी ऐसे नेमी, ऐसे श्रद्धालु अपनी समस्त शुभकामनाएं पाकर जाते हैं. वे फिर वहां से खाली नहीं लौटते उनकी प्रत्येक शुभेच्छा सफल होती है .

इसलिये आप भी यहां गुरु दरबार में प्रातःकाल सत्संग में आये हो और नियम पूर्वक आ रहे हो अथवा आगे भी आते रहेंगे तो आप भी अपने मन में यह पक्का समझ लें, आपकी भी जो शुभकामना है एवं कल्याणकारी अभिलाषा है वो गुरु महाराज आपकी अवश्य पूर्ण क
बोलो जय श्री कृष्ण! सत्नाम साक्षी. तभी महाराज
कहते हैं- सुबह जो गुरुअ दरि, अचनि जे सुवा
गुरुअ जे दया सां, वञनि से न खा

यह जो वेला है, इसमें हमारे सतगुरु महा
(सद्गुरु टेऊँरामजी) ने नाम की महिमा का, प्रेम की व
का, ज्ञान व वैराग्य की कथा का, भक्ति या योग की व
का जो शुभारम्भ किया वह अमृत वेला ही है. भाई "अ
में अमृत". बोलो राम-राम .

वेला भी अमृत और पीयें भी अमृत. दे
भाई-दीपक जलाना या दीपक का प्रकाश करना व
खराब बात नहीं है. खुद अच्छा है, परन्तु यदि उसे दिन
जलायें तो यह उचित नहीं समझा जाता. अब दीपक
स्वयं प्रकाश प्रदान करता है और अंधकार को नि
करता है, दीपक जलाने की बड़ी महिमा है. परन्तु दिन
जलाने से इसे दिवाले की निशानी कहेंगे. तो यह भी
ही है. गुरु के दरबार में किसी भी समय आओ
खराब बात थोरई है, क्योंकि हुआ जो गुरु का दर
परन्तु आप सभी प्रातःकाल में आये हो, अमृत वेल
आये हो, यह सबसे उत्तम में उत्तम बात है. अतः
अमृत वेला में आये हो, प्रेम से बोलो-राम-राम-राम-र

बाबा प्रातःकाल में हम जैसा भी विचार करेंगे
सारा दिन वो ही विचार हमें घेरे रहता है. क्यों
प्रातःकाल का जो वायु मण्डल है वो है स्वच्छ व शुद्ध
साथ ही साथ हमारा अन्तःकरण भी स्वच्छ, इन्द्रियां
शुद्ध, अतः इस स्वच्छ व शुद्ध वातावरण में इन्हें हम
संस्कार डालेंगे या इन्हें जैसा संस्कार मिलेगा. यथा-स
का गुरु के वचन का, नाम सुमरन का, प्रेम का,
गुफ्तार का आदि जैसा भी इसे संस्कार मिलेगा, वो ह
अन्तःस्थल पर छप जायेगा.

अब आगे महाराज जी क्या कहते हैं वो सु
रखी भेट गुर खे, मथो जे निवा

र्ज़ खां छुटनि से, थियनि माला माली.

प्रेमियों प्रेम से बोलो जय श्री कृष्ण! अब कहते , अमृतवेला में जो जिज्ञासु गुरु के दरबार आकर गुरुदेव चरणों में सन्तो के चरणों में, भगवान की मूर्ति के चरणों , श्रद्धा व प्रेम से दक्षिणा रखकर जो नतमस्तक होते हैं र-बार प्रणाम करते हैं, भाई, वो सारे कर्ज़ों से मुक्त हो ते हैं. वे लोक परलोक दोनों के कर्ज़ों से छूट जाते हैं.

हम जो जन्मों-जन्मों से पाप करके आये हैं, जो वगुण करके आये हैं, और उसी का हमें जो बदला देना वो भी गुरु महाराज की कृपा, भगवान की मेहरबानी से, न्तो के आशीर्वाद से, इन सारे कर्ज़ों से, जम के दण्डों से जीव छूट जायेंगे. जो अमृतवेला में गुरु दरबार में द्धापूर्वक आकर सीस निवायेगा. बाबा अमृतवेला में ना असर रहता है .

मेरा कभी-कभी किसी के घर में रहना होता है, तो वहां मैने देखा है, कि यदि कोई व्यक्ति प्रातःकाल में जोर की आवाज़ से बोलते हैं तो उस घर के सदस्य उन्हें समझाते हैं- अरे भाई अमृतवेला, अभी न अन्न मुँह में डाला है और न जल, ऐसे जोर से मत बोलो. शांति रखो.

यानी आम आदमी भी, जिन्हें अमृतवेला की पूरी महिमा ही नहीं मालूम और जिसने इतना शास्त्रादि भी नहीं पढ़े, उस पर भी अमृतवेला का इतना असर रहता है. उन्हें भी इस वेला का इतना ज्ञान तो है कि-अमृतवेला में व्यर्थ नहीं बोलना चाहिये. बाबा गुस्सा नहीं करना चाहिये, किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिये, अगर यदि कुछ कहना है तो इस वेला में क्या कहें- बोलो राम-राम! जय श्री कृष्ण! सत्नाम साक्षी !

तो भाई यह भी ऐसा ही है. इतना इस ब्रह्मवेला का महात्म है. इसे शास्त्रों ने ब्रह्मवेला भी कहा है.

संकलन- प्रेम प्रकाशी दिलीप

सद्गुरु शान्तिप्रकाशजी महाराज के सत्संग वर्खा से पावन प्रसंग

सद्गुरु टेऊँराम

एक बार एक प्रेमी सद्गुरु महाराजजी के पास ण्डाआदम दरबार पर सेवा करने के ख्याल से आया. क दिन की बात है- हमारे महाराज जी जगंल में ौचादि) करने के ख्याल से जा रहे थे, उस समय धूप भी न थी. उस प्रेमी ने देखाकि महाराज जी इस समय कहीं रहे हैं, तेज धूप है और वो छाता लेकर पीछे से भागा गा आया. महाराज जी ने देखा और कहा- भाई छाता ों लाये हो? प्रेमी ने कहा-मैंने देखा बहुत धूप है इसलिये छाता लाया. तब महाराज जी ने कहा-भाई! यदि मैं क छाता लगवाऊँगा तो मेरे पीछे वाले दस दस छाता ावायेंगे. सादा खाना, सादा पहनना, संयम में रहना, ात जागना, भजन करना यह सब तो कोई सद्गुरु ऊँरामजी महाराज से सीखे. इसलिये दम दम बोलो- न सद्गुरु टेऊँराम महाराज की जय.

बच्चों के सामने गलत काम मत करो

एक बार बच्चों के स्कूल में जाना हुआ. वहां कुछ उनसे सवाल पूछे- एक से पूछा- बेटे मांस मछली खाते हो? बच्चा बोला- नहीं. माँ बाप खाते हैं? बोला- नहीं. घर में कोई शराब पीता है? बोला- नहीं. अच्छा आगे पीयोगे- बोले नहीं. पर जब पूछा- सिगरेट वगैरह पीते हो? तब वह बच्चा चुप हो गया. मैंने कहा-बेटे बोलो- वह बोला- नहीं. मैंने पूछा- आगे पीओगे? बोला-हाँ .

क्यों पीओगे तुम्हें अपने पापा मना करें फिर भी पीओगे. उसने जवाब दिया- मेरे पापा भी तो पीते हैं, फिर मेरे को कैसे मना करेंगे .

इसलिये मैं बार-बार प्रार्थना करता हूं अध्यापकों से व परिवार से कि बच्चों के आगे कुछ भी निषिद्ध काम मत करें जिससे कि बच्चों के भविष्य पर बुरा असर पड़े.

कथा कहां छोड़ी

मैंने एक बार कथा आधे में छोड़ दी. फिर कल के दिन पूछा- बोलो भाई- कल कथा कहां पर छोड़ी थी? बोले- सांई यहीं इसी जगह पर, जहां आप कल थे. यहीं छोड़ी थी (व्यंग्य करते हुए) बताओ अब क्या कहें. सत्संग याद ही नहीं रहता. फिर मैंने कहा- चलो उसे ढूंढो यहीं कहीं मिल जायेगी .

प्रभुजी बसे साध की रसना

ब्रह्माजी जब वेद लिख रहे थे, तब भगवान ने उन्हें स्याही दी कि बाबा इससे वेद लिखो. वेद का एक एक अक्षर सच्चा है. वेद लिखने के बाद थोड़ी स्याही बच गयी, तब ब्रह्माजी ने भगवान से पूछा- यह शेष स्याही का क्या करुं?

भगवान ने आज्ञा दी कि जो सच्चे सन्त सतत नाम जपते हैं यह शेष स्याही उनके मुख जबान पर रखो- कभी कोई बात उन्हें अच्छी नहीं लगे तो इस स्याही से वे मिटा सकते हैं. इसलिये हमारे गुरुनानक देवजी ने कहा- प्रभजी बसे साध की रसना. जो सन्तो के वचन हैं वो वेद वाक्य हैं. वो जो-जो बात कहते हैं- वह प्रभु परमात्मा उनकी जबान पर अंदर बैठकर उपदेश करता है.

माता कृष्णा

सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज का दिनों दिन प्रभु से प्रेम बढ़ता गया. कभी संतो में कभी जंगल में कभी शहर के बाहर, कभी कहीं तो कभी कहीं नाम की खुमारी में रहते. माता कृष्णा के मन में ख्याल हुआ कि शायद इसे कोई भूत लग गया है, जो हमारी बात नहीं मानता, पेड़ों के नीचे बैठता है. अब माता कह रही है पुत्र को- पुत्र तुम्हारे दिमाग को क्या हुआ है, तुम्हारा मन घर में लगता ही नहीं. स्वामीजी भी माता को बहुत समझाते हैं, परन्तु माता को उससे आराम ही नहीं आता. सब कह रहे हैं तुम्हारे लड़के को भूत लग गया है. सन्त इसे जादू कर गये हैं, इसका पैर भी स्थिर नहीं रहता और बातें भी बिल्कुल अलग ही करता है .माता आगे बैठकर जाड़ कर रही है कान में भुण-भुण. जैसे इसका ख्याल मिटे और धंधे में मन लगे और साधुओं के पास न जाये. लेकिन जैसे जैसे मा उपाय करती वैसे वैसे स्वामीजी संतो के यहां बहुत ज लगे. स्वामीजी माता को कहने लगे- माता "इश्क को क रोके खुदा भी न रोक पाये" "आशिक थिये अलाह अ मां" .सामी साहब ने कहा है- जब जीव को प्रेम इश्क जाता है तो उसे देखने अलाह भी आकाश से उतर अ है. किसी का बेटा विलायत से आ रहा था तो पिता उस लेने जा रहे थे. किसी ने कहा- आप क्यों जा रहे हैं, उन्होंने कहा- अपने पुत्र को देखने. लेकिन वह घर ही आयेगा. पिता ने कहा- नहीं मैं उसे स्टेशन पर ही देखूं यह प्रेम है .

फिर माता ने सोचा स्वामीजी को लालच दूं, सकता है फिर न जाए. माता ने कहा- पुत्र अभी फस उगानी है, बारिश का मौसम आने वाला है, फसल तैय हो जाये फिर जाना. स्वामीजी ने कहा- माता अगले व वर्षा फिर आयेगी लेकिन संत अभी आये हैं, यह घ अमोल है. मुझे इनकी सेवा करनी है. तुम्हारे होते कितने सेठ करोड़पति चले गये, वे क्या लेकर ग

स्वामीजी बरतन बेचकर जो पैसे मिलते उन पै से संतो के लिये वस्तुएं लेकर जाते थे. उस पर माता क लगी- पुत्र इससे निन्दा होगी, तूने यह विचार भी न किया. तू क्यों उनका संग करता है, उनको तो कोई व धंधा होता नहीं ऐसे ही बैठे रहते हैं .

स्वामीजी माता से कहते हैं. माता ऐसे न क जो काम साधु एक दिन में करते हैं वह काम लोग जनम में भी नहीं कर सकते. वे भक्ति करते हैं, सेवा क हैं, नाम जपते हैं. और ये बरतन तो फिर मेहनत क बन जायेंगे. लेकिन ऐसे साधु फिर नहीं मिलेंगे. ये कण दे गये हैं मुझे रंग में रंग गये तब माता कहने लगी- अच्छा पुत्र! यह काम किया किया, लेकिन श्मशानों में जाकर क्यों बैठते हो? क्यों जगहों पर जाते हो. तो स्वामीजी कहने लगे- इसलि जाता हूं जैसे फिर मुझे डर न हो, पहले ही भ्रम संशय अ डर छोड़ना चाहता हूं.

संकलन- कु. विनीता, उल्हासन

संक्षिप्त जीवन-दर्शन मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज ३० अगस्त पुण्यतिथि पर विशेष

भारत की तपोभूमि पर अनेक सन्त-महापुरुषों का अवतरण हुआ है, ऐसे महापुरुषों में उत्कृष्ट एवं दुर्लभ विशेषता से ओत-प्रोत विशेष आभा पायी गयी मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज में. आपका शुभ अवतरण अविभाजित भारत के सिन्ध प्रान्त के घुण्डन नामक ग्राम में सन् १९३० विक्रम संवत् १९८७ की वैशाख माह १३ को पिता श्री हीरानन्द व माता मोतिलबाई के घर में हुआ. घर-परिवार में सदैव सन्तों-महात्माओं के आगमन व सत्संग के कारण आपको बचपन में ही भक्तिमय वातावरण प्राप्त हुआ. सन्तों-महात्माओं के रहन-सहन से आप बाल्यावस्था में ही भक्ति-वैराग्य की चर्चा करते रहते थे. २४ वर्ष की आयु में आपको महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ. आपने उनसे विधिवत् गुरु-दीक्षा प्राप्त की एवं उसी समय अपना पूरा जीवन गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित करने का संकल्प लिया.

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का प्रत्यक्ष संसर्ग पाकर आपने उन्नत मानसिक दशा को प्राप्त किया. गुरुवर की तरह आप समय के बहुत पाबन्द थे, उन्हीं की तरह समय की पाबन्दी व सादगी को आपने आत्मसात कर लिया. गुरुवर के महानिर्वाण के पश्चात् आपने अपना पूरा समय ग्रन्थों, महापुराणों-उपनिषदों के गहन अध्ययन में लगाया. शास्त्रों में आप निपुण पारंगत थे, आपका शास्त्रों के प्रति गहरा लगाव था. सदैव साधकों को रामायण-महाभारत पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे. आपने प्रेम प्रकाश मण्डल के सत्-साहित्य के प्रकाशनों का निर्देशन पूर्ण गंभीरता से किया.

प्रेमास्वरुप सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के महानिर्वाण के पश्चात् आपको प्रेम प्रकाश मण्डल की बागडोर सौंपी गयी. अपने सारगर्भित उपदेशों से आपने प्रेमियों व जिज्ञासुओं को सत्योपासना का मार्ग बताया, अपने ओजस्वी प्रवचनों में आपने अनेक गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश डाला, आप त्याग की आदर्शमय मिसाल थे. आपका जीवन वैराग्यवान था इसकी झलक आपके प्रवचनों में स्पष्ट महसूस की जाती थी. आप नीति, मान-मर्यादा व धर्म में निपुण थे. आपके प्रवचनों को समझने के लिये बुद्धि को एकाग्र करना पड़ता था. श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी. आचार्य उपासनं को विशेष महत्व देकर आप सदैव आचार्यश्री को ही भगवान इष्ट व गुरु मानते थे. आचार्य जी के महामंत्र सत्नाम साक्षी का विस्तार कर इस महामंत्र को विश्व के कौने-कौने तक पहुंचाया.

धर्म के सम्बन्ध में आप कहते थे कि संसार में धर्म ही मनुष्य का वास्तविक साथी है. जो हमेशा उसके साथ जाता है "चर्म धोने से कर्म नहीं धुलते" वे तो धर्म से ही धुल सकते हैं. धर्म के प्रति आस्था व विश्वास जरुरी है बिना आस्था के धर्म मात्र दिखावा और खुद के साथ छल है. सम्मान सभी धर्मों का करो, पर अनुष्ठान अपने धर्म का, तब ही जीवन में आत्म तत्व की प्राप्ति संभव है. आग का धर्म है जलाना और पानी का धर्म है शान्ती व शीतलता प्रदान करना. इसी प्रकार मनुष्य का धर्म है मनुष्य को मनुष्य के प्रति काम आना व सदैव उपकार करना. आप प्रचार प्रसार व मान सम्मान से दूर रहते थे. आपकी सत्संग वाणी में कबीर जैसी सार्थकता भरी हुई थी. रामायण महाग्रन्थ की चौपाईयों से सदैव आपने समाज को मान मर्यादाओं का पाठ पढ़ाया.

दृष्टि व चरित्र के सम्बन्ध में आप बताते थे कि जीवन में चरित्र का बड़ा महत्व है "जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि" सोये हुए आदमी के पास जाने से नींद ही आयेगी. इसलिये जागे हुए महापुरुषों की शरण में पहुंचकर चरित्र निर्माण करो, जिससे आत्म सम्मान संभव हो. जीवन को सजगता से तथा मृत्यु को सहजता से स्वीकार करना चाहिये, जीवन से हमारी यात्रा प्रारंभ होती है और मृत्यु पर जाकर समाप्त

हो जाती है. जीवन के प्रति आसक्ति की भावना मृत्यु के प्रति भय प्रकट करती है.जब यह निश्चित है कि एक दिन सभी को जाना है तो सत्य को स्वीकार क्यों न करें. पाँच तत्वों से निर्मित यह काया एक दिन मिट्टी में मिल जायेगी इसलिये निरर्थक अहंकार मत करो. उपदेशों के साथ-साथ आपके हृदय में मूक प्राणियों के प्रति दया भावना भी थी. आपकी प्रेरणा व स्वप्न साकार करते हेतु जयपुर में सद्गुरु टेऊँराम गौशाला का निर्माण किया गया. पर उपकार में सदैव अग्रणी रहने के कारण विभिन्न शहरों में आपके नाम से निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टरों में निर्धन परिवारों के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा रही है. अनन्त गुणों के साथ आपमें दया-भावना, मृदुता, नीति, मान मर्यादा, समय की पाबन्दी, आदर्शवादी सरल व सादा जीवन एवं निर्भयता आदि विशेष गुण भी विद्यमान थे .

जीवन जीना भी एक कला है जो इस कला को समझ लेता है वह मृत्यु के प्रति सहज हो जाता है. सत्संग आत्म ध्यान आदि के लिये स्थिरता ही प्रधान है, स्थिरता से ही सत्संग आत्म ध्यान में मन लगेगा, परमशान्ति की प्राप्ति होगी. सौ बार माला फेरते हुए मन स्थिर नहीं है तो माला फेरने का कोई लाभ नहीं. जो मनुष्य अपने इष्ट या सद्गुरु के प्रति अटल विश्वास व प्रेम रखता है वह सच्चा भक्त या प्रेम प्रकाशी बन जाता है. जब तक अपने जीवन में जड़ व चेतन की ग्रन्थि का पता नहीं लगा लेते, तब तक जीवन में परम शान्ति की अनुभूति नहीं हो सकती. जिसने अपना मन एवं बुद्धि अपने गुरु को अर्पण कर दी उसे ही जीवन में परम तत्व की प्राप्ति हो सकती है.

प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज में ही सभी सन्त-महात्मा निहित हैं अतः उन्हीं का ध्यान करें, उन्हें ही मन बुद्धि कर्म वचन समर्पित कर मानव जीवन को सार्थक करें. आप आचार्यश्री के जन्मदिवस शनिवार को विशेष महत्व देते थे. प्रेम प्रकाश मण्डल की साक्षी दर्शन, अमरापुर दर्शन, सद्गुरु सर्वानन्द जीवन चरित्र, नित्य नियम प्रार्थना आदि पुस्तकें आपके द्वारा रचित की गयी थी. इतने बड़े मण्डल के मण्डलाध्यक्ष होते भी आपके द्वारा मैं गुरु दरबार का सेवाधारी हूं कहना, यह आपकी निर्मानता का परिचायक है. आप अधिकांश गुरु दरबार अमरापुर स्थान जयपुर में ही निवास करते थे

७० वर्ष की आयु में शनिवार पावन एकादशी के दिन श्रावण मास २६ अगस्त २००० को उनकी आत्म ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गयी परन्तु उनका दिव्य आलोक आज भी स्पष्टतः महसूस करते हैं

आपने मण्डलाध्यक्ष के रूप में प्रेम प्रकाश मण्डल की आभा को चहुं ओर आलोकित किया, समाज को नई दिशा देकर प्राण फूँकने जैसा मार्गदर्शन दिया. आपका चरित्र एचं उपदेश सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा.

बी.डी.टेकवानी,जयपुर

भजन

तर्जः

स्वामी हरिदासराम तोखे बारम्बार प्रणाम आ
थी दिसां सूरत तुहिंजीअ में खुद सच्चो भगवान मां
स्वामी हरिदासराम तोखे बारम्बार प्रणाम आ
१. हीणनि जो हमराहु हुएं, अड़ियनि जो आधार हुएं
सभखे देई विछोड़ो विछोड़ो, कहिखें सुणायां हाल मां
स्वामी हरिदासराम तोखे बारम्बार प्रणाम आ
२.विरती सांई सां लगाए,मन मालिक सां मेले छदियो
तुहिंजे चरननि जो हरदम, थी धरियां नितु ध्यान मां
स्वामी हरिदासराम तोखे बारम्बार प्रणाम आ
३. मन खे मोहे थी सदा तस्वीर, तुहिंजी आ सुन्दर
दासनि दासिनि ते दया कर, मञां तुहिंजो अहिसान मां
स्वामी हरिदासराम तोखे बारम्बार प्रणाम आ

प्रेम प्रकाश महिला मण्डली, रायपु

सांई टेऊँराम जीवन दर्शन प्रतियोगिता के शेष प्रतियोगियों के नाम

बलोतरा शहर (बाड़मेर)- निकिता(१६), गुड़िया(१३), रितु(१२), रजनी(१८), अनीता(१५), पूजा(१३), सपना(१७), बबली(१६), जयपुर शहर- रमा मोरानी(२१), सुरभि हासनानी, सत्री धर्मानी(१४), जया खानवानी(१५), भारती धर्मानी(८), दीपिका सीतलानी(१६), लता लालवानी(१८), पूनम लालवानी(१०), पूनम भागवानी(१७), लीला आहूजा(१५), रोहित तीर्थानी(१०), नीतू आहूजा(२०), लीलावती राधानी(४८), स्मरण, सिवनी- दीपा मोरानी.

आनन्द सागर में बाढ़, डूबा प्रेम प्रकाशी संसार
सद्गुरु बाबा टेऊँराम प्रकटोत्सव-आनन्दोत्सव

भारतवर्ष में अनादि काल से ही साधु सन्तो की परम्परा रही है. सन्तो का जीवन सादा जीवन उच्च विचार पर आधारित है. सन्तगण साधारण मनुष्यों के जीवन में भी अपना योगदान पूर्ण निष्ठासे ही निभाते हैं. मानव जीवन में तीन महत्वपूर्ण तत्व तन मन और आत्मा है तथा तीन कारक कर्म धर्म और मोक्ष हैं. इनमें कर्म तो तन से जुड़ा है, धर्म मन से और मोक्ष आत्मा से जुड़ा हुआ है. साधु सन्त ही हमें बताते हैं कि किस प्रकार हम अपने जीवन में अपना कर्म धर्मपूर्वक निभाते हुए मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं. सन्तो की वाणी और विचारों का प्रभाव हमारे मन आत्मा पर गहराई से पड़ता है. सन्तो के प्रवचन सुनने व उनके बताये सत्मार्ग पर चलनेसे हमारा मन चाँदी की तरह धवल और आत्मा प्रकाश की तरह उज्जवल हो जाती है. प्रकाशित आत्मा की किरणों से ही हम जन्म मृत्यु रूपी अन्धकार को दूर कर, पंच विकारों का संहार करते हुए मोक्षरूपी दैवीय पथ पर अग्रसर हो सकते हैं, यहां परम तत्व से साक्षात्कार कर तद्रूप हो सकते हैं.

ऐसा दुर्लभ सारगर्भित ज्ञान हम प्रेमप्रकाशियों को मिलता है आचार्यश्री स्वामी टेऊँरामजी महाराज से. उनके पवित्र जीवन चरितामृत को यदि ध्यान से देखें तो ज्ञात होगा कि आपका सम्पूर्ण जीवन ज्ञान प्रेम भक्ति का भण्डार है. वैसे तो हमारे प्रेम प्रकाश मण्डल के सभी सन्तो का अवतरण दिवस सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में धामधूम से मनाया जाता है लेकिन हमारे आधार आचार्यश्री बाबा टेऊँरामजी महाराज के प्रकटोत्सव की तो बात ही निराली है. श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के रचियता, ज्ञान के भण्डार, तपस्वी, त्यागी सर्व उपमा योग्य टेऊँराम बाबा जिनका अलौकिक अवतरण हम जीवों को सांसारिक बंधनो से मुक्त कराने के लिये ही हुआ. ऐसे दयालु बाबा का प्रकटोत्सव सारे संसार के साथ ही हमारे परम पावन गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान में मुख्य रूप में मनाया गया. आनन्दोत्सव के आनन्द सागर की बाढ़ में कैसे प्रेम प्रकाशी जगत बह गया. आइये हम आप भी उन आनन्दातिरेक क्षणों को अमरापुर धाम सहित समस्त प्रेम प्रकाशी संसार से समेटें.

6 जुलाई बुधवार– आज आचार्यश्री के अवतरण महोत्सव के प्रारम्भ होने की पूर्व संध्या है. श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की राजधानी जयपुर के राज्भवन श्री अमरापुर धाम के अतिरिक्त सारे प्रेम प्रकाशी जहां के समस्त सक्रिय प्रेम प्रकाशी सेवाधारी तन मन से अपने शहर कस्बों के उन आयोजन स्थलों को सजाने संवारने में इस आंशका से लगे हुए थे कि आने वाले पांच दिनों में प्रेम प्रकाशी संसार के आनन्द सागर में कहीं बाढ़ न आ जाये. और उनकी आंशका निर्मूल भी नहीं हुई. नर-नारी-बाल-वृद्ध सभी अपनी योग्यतानुसार आनन्दोत्सव की तैयारियों में व्यस्त थे, हांलाकि ये तैयारियां तो पिछले काफी दिनों से की जा रही थीं. आज तो बस डूबने की सम्पूर्ण तैयारी हो रही थी

7 जुलाई गुरुवार– उल्लासित प्रेमी भक्त रंग बिरंगे वस्त्रों में प्रातः से ही अमरापुर दरबार सहित समस्त आयोजन स्थानों पर पहुंचने लगे. आज अमरापुर सहित उन जगहों की छटा देखते ही मन-मुग्ध हो रहा था जहां पर बाबा टेऊँराम का आनन्दोत्सव मनाये जाने की तैयारियां की गयी थी.हम सबके हृदयस्थल अमरापुर दरबार की अलौकिक छटा कुछ इस तरह थी

श्री दरबार के बाहरी परिसर में बनायी गयी आकर्षक रंगोली

झलकियाँ

१. ६० फुट लम्बी गुफा झाँकी दर्शनों के लिये लम्बी कतारों में उत्सुक भक्तजन .

२. गुफा के अन्दर बाबाजी की मनमोहक प्रतिमा व भगवान शंकर की जटाओं से बहती गंगा आकर्षण का केन्द्र .

३. ४ वर्षीय बालिका द्वारा सांई टेऊँराम लीला का मधुर गायन.

४. प्रतिदिन आकर्षक रंगोली, कतारबद्ध ११६ प्रज्जवलित दीपक साथ ही सारे दरबार परिसर में दीपमाला का आकर्षण .

५. पर्वत गुफा के बाहर झरना व जंगली जानवरों सहित गौमाता छोटे छोटे मंदिर पेड़ पौधे मनोहारी दृश्य थे .

६. मीडिया कवरेज भास्कर भक्ति, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, महानगर टाईम्स, नव ज्योति, राष्ट्रदूत, महका भारत, पंजाब केसरी आदि में सचित्र समाचारों का प्रकाशन प्रमुखता से किया गया. –

बरबस ही आगन्तुक प्रेमियों का ठिठकने पर मजबूर कर रही थी. गुरुमुख द्वार की सीढ़ियां चढ़कर ज्योंही सत्संग परिसर में प्रवेश किया तो देखा कि सूर्य भगवान के तेज से भक्तों को बचाने के लिये पूरे सत्संग हॉल को श्वेताम्बरी शामियाने से ढका गया था. सत्संग मंच पर निर्मित एक अस्थायी प्रकोष्ठ, जिसको चारों ओर से शंखो सिपी की झालरों से सजाया गया था. इस मन्दिर को और ज्यादा मनोहरकारी दर्शनीय बना रही थी इष्ट आराध्य भगवान लक्ष्मी-नारायण, आचार्यश्री, सद्गुरु सर्वानन्दजी, सद्गुरु शान्तिप्रकाशजी, सद्गुरु हरिदासरामजी की मनमोहक प्रतिमाएं. उन प्रतिमाओं के ऊपर शंखो के बड़े बड़े झूमर लगाये गये थे. इस अस्थायी प्रकोष्ठ मंदिर के दर्शन से नेत्रों को आनन्द की अनुभूति हो रही थी इसी के पास में श्रीमद्भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब विराजमान किये गये थे .



सत्संग हॉल के अन्तिम कोने में बनी हुई थी इस आनन्दोत्सव का मुख्य आकर्षण; ६० फुट लम्बी गुफा झाँकी. गुफा के अन्दर आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का ध्यानावस्था में दर्शन हृदय को भक्तिमार्ग की ओर प्रेरित कर रहा था. पर्वतों जगंलो की श्रृंखला को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया था कि देखने पर दर्शनार्थीयों को पर्वत जगंल में ही होने का आभास करा रहे थे. गुफा में जगह जगह जंगली जानवरों खरगोश हिरण शेर भालू के उसी पशु के अनुरूप विशाल चित्रों को लगाकर उनकी उपस्थिति दर्शायी गयी थी. त्रिपुरारी भोलेबाबा माँ गंगा को जटा से प्रवाहित करते हुए प्रेमी भक्तों को दर्शन दे रहे थे. पुष्प लताओं पेड़ पौधों को लगाकर इस झाँकी को जीवन्त रूप देने का सफल प्रयास प्रंशसनीय था. इस झाँकी में प्रवेश करते ही लोहे के चौकोर कुण्ड में हिम सम शीतल जल में जब पैर रखे तो पूरा तन जडवत सा महसूस होने लगा. हरियाली ओढ़े पर्वतनुमा भूमि पर कदम कदम बढ़ते गये तो दाईं ओर बनी एक छोटीसी गुफा में तपस्
आचार्यश्री की मनोहर प्रतिमा से पूरे जंगली वातावरण
अनोखी आभा का अहसास हो रहा था. इस गुफा को
ओर से पताकाओं व विद्युत झॉलरों से भी आलोकित कि
गया था. इस परम मनोहर दृश्य के दर्शनों से हृदय
महाराजश्री के प्रति प्रेम की लहरें उड़ान भरने लगी. अ
क्या सत्संग सभा शुरू हो गयी. आईये चलें अमृत पी

प्रातः ७ बजे प्रार्थना के स्वर के साथ इस ति
जन्मोत्सव की शुरूआत हुई. प्रेममूर्ति सद्गुरु स्व
भगतप्रकाशजी महाराज सत्संग मंच पर संतगणों के साथ
विराजित थे जैसे तारों के मध्य चन्द्रमा. पूज्यश्री के सानिध्य
पंचदिवसीय पाठारम्भ हुए. गुरु प्रार्थनाष्टक के पाठ के स
इस प्रातःकालीन सत्संग सभा का समापन हुआ. सायं ४ ब
से पुनः सत्संग सभा का आरम्भ भजन गायन से हुआ. ज
पूज्य स्वामीजी मंचस्थ हुए तो भक्तगण भावविभोर होक
उनकी तेजस्वी दिव्य आभा को निहार रहे थे. जब महाराज
अपनी मधुर ओजस्वी वाणी में आचार्यश्री के पावन जीवन
गुणगान करने लगे तो प्रेमी भी एकचित्त हो मंत्रमुग्ध होक
स्वामीजी के श्रीमुख से निकली ज्ञानगंगा में अवगाहन क
लगे. आज समाधि स्थल को विशेष रूप से फूलों की विभिन्न
किस्मों से सजाया गया था. सायंकालीन सत्संग सभा
समापन सत्नाम साक्षी महामंत्र के जाप से हुआ .

8 जुलाई शुक्रवार– 119 व्यंजनों का भ

इस आनन्दोत्सव के अन्तर्गत श्री दरबार में
आयोजन रखे गये थे, उनमें से ही एक था; छप्पन भ
कार्यक्रम में ११६ व्यंजनों का भोग. आज भी जब श्री दरबार
प्रवेश किया तो दरबार परिसर में बनायी गयी आकर्षक रंगो
को देखकर मन मुग्ध हो गया. नित्य की भांति प्रार्थना गायन
प्रातःकालीन सत्संग सभा की शुरूआत हुई. संतो ने अप
मधुर वाणी से बाबा टेऊँरामजी के जीवन चरित्र का व
किया और गुरु प्रार्थनाष्टक के सामूहिक गायन के साथ स
का समापन किया गया. उसके बाद शुरू हुई छप्पन भोग
११६ व्यंजनो को तैयार करने की सेवा जिसे महिला मण्ड
बखूबी निर्वहन कर रही थी. इधर सेवाधारी मंचको अ
आकर्षक रूप देनेके लिये श्रमशील थे ही .

दोपहर बाद समय रहा होगा ३ बजे का, भारी त
के बावजूद प्रेमी भक्तों का उत्साह चरम पर था. मात
परिजनों के साथ समूह में आती दिखायी पड रही थीं, हर

हाथों में घर पर बनाये व्यंजनो के बर्तन स्पष्ट दिखायी पड़ रहे थे. सभी के उल्लासित चेहरों के भाव यही कह रहे थे कि



न व्यंजनों को भी आचार्यश्री स्वीकार करें. सायंकालीन त्संग गंगा की शुरूआत श्री अमरापुर दरबार के नन्हें विद्यार्थी तगणों ने अपनी तुतली मीठी आवाज में भजन गायन से की. सके पश्चात् विभिन्न स्थानों से आयी भजन मण्डलियों ने पनी प्रस्तुति दी. फिर एक छोटे से बालक ने "देना हो तो जिये, जन्म जन्म का साथ" भजन गाया तो प्रेमी भावविभोर कर करताल करने लगे. इधर ११६ प्रकार के व्यंजन नोहारी सजावट के साथ आचार्यश्री बाबा टेऊँराम के समक्ष ख दिये गये थे "आओ आओ सांवरिया भोग लगाओ कि प्पन भोग तैयार जी" भजन गाकर अपने मालिक को रिझाया रहा था .

अस्थायी बने मंच पर आचार्यश्री की प्रतिमा को भिन्न रंगो से सजाया गया था और वे रंग फूल-पत्तियों व द्युत झॉलरों के थे. आपके समीप ही सिद्धि विनायक श्री णेशजी विराजे हुए थे. पूरा सत्संग सभालय व्यंजनों की गन्ध से महक उठा. मीठा नमकीन मेवे और सभी तरह के ल महाराजश्री के सम्मुख उपस्थित थे. नाना प्रकार के जनों पर तुलसीदल और गुलाब के फूल रखे गये थे. तगण ने "आओ भोग लगाओ स्वामी टेऊँराम-बाबा टेऊँराम" भजन गाकर महाराजश्री को भोग लगाने के लिये विनय किया तो प्रेमी भी कहां पीछे रहने वाले थे वे भी बाबाजी को भोग लगाने का आग्रह करने लगे. बाबाजी का भोगप्रसाद १० हजार भक्तजनों में समान रूप से वितरित किया गया.

9 जुलाई शनिवार–श्रीमंदिर में फूल बंगला झाँकी

आचार्यश्री के जन्मदिवस का साप्ताहिक दिवस शनिवार, और बाबा टेऊँरामजी महाराज के ११६ वें अवतरण समारोह आनन्दोत्सव का तीसरा दिन. नित्य नियमानुसार प्रातःकालीन सत्संग का आरम्भ प्रार्थना गायन से होकर गुरु प्रार्थनाष्टक गायन से सभा की समाप्ति हुई. और इसी के साथ शुरू हुई शाम के फूल बंगला झाँकी की तैयारियां .

आज श्री दरबार में फूल बंगला झाँकी थी जिसके देखने के लिये प्रेमियों में खासा उत्साह था, ऐसा प्रेमीगणों की आपसी वार्तालाप से मालूम पड़ रहा था. झाँकी के लिये मोगरा, गेंदा, चमेली, सूरजमुखी, गुलाब इत्यादि विभिन्न प्रकार के फूल और लताएं आ चुकी थी. पुरुष व महिला वर्ग द्वारा फूलों लताओं को विविध आकार देने के लिये प्रकृति द्वारा प्रदत्त बुद्धि-बल के अनुसार सेवा श्रम किया जा रहा था.

निर्धारित समय ४ बजे से सत्संग सभा की शुरुआत नन्हें संतगणों ने भजन गाकर की, इसके पूर्व ३ बजे से महिला मण्डली ने गुरुदेव के गुणानुवाद के भजन गाये. कोटा, अजमेर से आई भजन मण्डलियों ने बाबा के जीवन प्रसंगो को बड़े भावपूर्ण ढंग से भजनों द्वारा गाकर सभी का मन मोह लिया. सोलह शिक्षाओं के गायन से हुआ समापन सायंकालीन सत्संग गंगा का. इधर श्री मंदिर व समाधि स्थल से पुष्पों की भीनी भीनी सुगंध से वातावरण आच्छादित हो उठा. आईये हम भी इस सुगंधमयी नजारे का महकता अवलोकन करें-

समाधि स्थल पर शंखो व पुष्पों की झॉलरों से सजावट से नयनसुखानन्द की प्राप्ति हो रही थी तो ऊपर श्री मंदिर में प्रवेश करने पर मन भी प्रफुल्लित होकर नाचने लगा और यही कहने लगा कि बस यही मनभावन दृश्य देखता रहूं. महाराजश्री के मंदिर में लकड़ियों की सहायता से बनाये गये महल को पूर्णरूपेण फूलों लताओं पत्तियों से सजाकर अति मनोहरकारी फूल बंगले का रूप दिया गया था. सचमुच के बंगले के सदृश लग रहे इस नयनाभिराम दृश्य को देखकर हृदय गदगद हो उठा. रोज की तरह आज भी श्री दरबार को ज्योतिर्मय दीपकों से रोशन किया गया .

10 जुलाई रविवार–119 दीप थालियों से महाआरती

प्रातःकालीन सत्संग में नियमित रविवारीय कार्यक्रम

के तहत आज सद्गुरु सर्वानन्दजी महाराज की प्रवचन कैसेट से प्रेमी भक्तों ने अमृतवाणी का लाभ लिया. सायंकालीन सत्संग की मौज के बाद आज एक अभिनव नजारे को देखने के लिये दोपहर बाद ३ बजे से भक्तों के समूह आना शुरू हुए तो यह सिलसिला सायं महाआरती होने तक चलता ही रहा. महाआरती के लिये सत्संग मंच पर अस्थायी मंदिर में आचार्यश्री व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की विशाल तैलीय प्रतिमाएं स्थापित की गयी थीं. उनको चारों ओर फूलों व विद्युत झॅालरों से सजाया गया था. ११६ थॅालियां पूजा की सामग्री से सुसज्जित होकर मंच पर रखी गयी थीं. और इधर भाग्यशाली ५० महिलाएं गुलाबी रंग की एकसी वेशभूषा पहिने और पुरुष वर्ग में से भी भाग्यप्रवर ५० भक्त सफेद कुर्ते पायजामे में कतारबद्ध होकर बाबा टेऊँरामजी महाराज के सामने सतर्क मुद्रा में तैयार खड़े थे. वहीं उनके आगे खड़े हुए १६ सन्तगण भी बाबाश्री की अर्चना करने को उत्साहित हो रहे थे. उधर मंच पर से विद्वानों द्वारा आचार्य जी के गुणों का बखान भजनों के माध्यम से निरन्तर चल ही रहा था. सायं के ६:३० तक सत्संग सभागार के अतिरिक्त श्री दरबार का परिसर भी प्रेमीजनों से भर चुका था. और मधुर श्लोक उच्चारण के साथ महाआरती का आह्वान हुआ, सम्पूर्ण श्री



दरबार में आरती के स्वर गूंज उठे. पहले इष्टदेव की आरती हुई. एकलय होकर जब ११६ आरतियाँ आचार्यश्री की प्रतिमा के आगे घूम रही थीं तो यह अलौकिक दृश्य जैसे आँखों में कैद हो जाना चाहता था, और इस इच्छा को भी पूरा कर रहे थे कैमरामेन. लगभग २० मिनट तक चले इस परम मंगलमय मनोहर दृश्य के क्षण सदैव अविस्मरणीय रहेंगे. इस सुन्दरतम नजारे के बाद श्री मंदिर की परिक्रमा करके जैसे ही सत्संगालय के बाहरी परिसर में आये तो आकर्षक रंगोली पर ज्योतिर्मय दीपकों की सजावट देखते ही मन आनन्दित हो गया.

11 जुलाई सोमवार–महाप्रसादी भोग, बधाई गी
दीपोत्सव– आनन्दोत्सव के मधुरकारी चार दिन कैसे
गये पता ही नहीं चला, और आज इस महान उत्सव
अन्तिम पाँचवा और महत्वपूर्ण दिवस है. ११८ वर्ष पूर्व अ
की तिथि को ही माता कृष्णादेवी की कोख से सृष्टिनियंता
अंशावतार का अवतरण हुआ. और ऐसे परम पवित्रक
दिवस की खुशियां भला क्यों न संसार मनाये. इस वर्ष तो १
वें अवतरण दिवस की खुशीयों के आनन्द सागर में प्रेम प्रक
जगत आकण्ठ तक ऐसा डूबा कि उसकी डूब की तरंग अ
तक महसूस की जा रही है.

आज के अति महत्व के दिन जयपुर महानगर का
जैसे हर रास्ता श्री अमरापुर की ओर मुड़ गया था. भीड़
भीड़ और अपार भीड़ प्रेम प्रकाशियों की. और यह केव
जयपुर का ही समाचार नहीं है अपितु प्रेम प्रकाशी संसार
हर उस शहर कस्बे का, जहाँ हमारे बाबाजी का प्रकटोत्
मनाया जा रहा था. श्री दरबार के हर भाग को आज वि
रूप से सजाया गया था चारों ओर फूलों की भीनी भीनी मह
के साथ इत्र अंबीर धूप इत्यादि सुगन्धित पदार्थों की सुगंध
सारा श्री दरबार महक उठा था. सत्संग मंच पर बनाये
अस्थायी मंदिर के सम्मुख आज एक विशेष सीढ़ीनुमा मंच
बनाया गया था जिस पर ११६ दीपकों को गुलाब गेंदें की
पत्तियों व गुलदस्तों की सजावट के साथ व्यवस्थित किया
था. वहीं उसके नीचे पास में ११६ किलो की महाप्रसादी
रखी गयी .

प्रातः ७ बजे प्रार्थना के स्वर के साथ सत्संग
की शुरूआत हुई. संतगण बाबाजी के अमृतमयी जीवन प्रसं
को अपनी मधुर वाणी द्वारा सुना रहे थे. ९:३० बजे म
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के अमृतवाणी को कैसेट
माध्यम से सबने श्रवण किया. उधर अभी तक सेवाध
तन्मयता से आचार्यश्री का और श्रृंगार करने में लगे हुए
श्रीमद्भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का पारा
होने के बाद सोलह शिक्षाओं के समवेत स्वर से सभालय
उठा. इसके पश्चात् संतो के करकमलों से सद्गुरु टेऊँ
जीवन लीला प्रतियोगिता के
पुरस्कार पुरस्कृत प्रतिभागियों
को दिये गये. सर्वश्रेष्ठ
पुरस्कार से सम्मानित नन्हीं
बालिका दीपिका सतवानी ने
मंच पर आकर जब सद्गुरु



टेऊँराम लीला के पद सुनाये तो सारा सभागार तालियों से गूंज उठा. सभी प्रेमी कौतुहूलवश उसे देखने लगे .

सभी सन्तगण उस आकर्षक मंच के पास एकत्रित हुए. श्री प्रेम प्रकाश संत मण्डल के वयोवृद्ध संत पूज्य स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज के साथ स्वामी मनोहर प्रकाशजी व संत मोनूराम जी के द्वारा दीपकों को प्रकाशित किया गया. थोड़े ही क्षणों में जब ११६ दीपक प्रज्जवलित होकर अपनी किरणों से सारे सभासदों को रोशन करने लगे तो सारा श्री दरबार बाबाजी की जयजयकार से गुंजायमान हो उठा .

जब संत मनोहरलालजी ने "जन्म लही अजु जोगी आयो" भजन गाया तो प्रेमी भक्त भी भावविभोर हो अपने अपने स्थानों से उठकर करताल के साथ नृत्य करने लगे. भजन गायन का मधुर स्वर उधर बैण्डबाजों का संगीत सम्पूर्ण श्री दरबार में आनन्द ही आनन्द बरसा रहा था. "जन्म मनायो मिली मौज मचायो, मूंजो सतुरु आयो" भजन प्रस्तुति से तो भक्तिभाव का ऐसा संचार हुआ कि आनन्दातिरेक में नाचते झूमते भक्तों के नयनों से प्रेमाश्रु निकल पड़े. "टेऊँराम बाबा की जय मना लो" की गूंज से तो आनन्दवर्खा ऐसी तो हुई कि सारा प्रेम प्रकाशी जगत डूब गया. और मजे की बात यह भी रही कि बचाने को कोई नहीं कह रहा, इस डूब में प्रेमी भक्त सदा डूबा ही रहना चाहता था. बैण्ड की मधुरकारी स्वरलहरी के साथ आनन्द सागर में डूबे भक्तजन प्रेमानन्द की उड़ान भी भरने लगे. है न सांई बाबा टेऊँराम का चमत्कार, डूब रहे हैं फिर उड़ान भी भर रहे हैं. इधर संतगण इस आनन्दोत्सव के महाप्रसाद का भोग लगाने को आचार्यजी से आग्रह कर रहे थे. समय का रथ अपनी गति से भागा जा रहा था, घड़ी की सुईयां दोपहर के १२:३० बजा रही थीं. संतो ने जय जय श्री राधे-श्याम के साथ इस आनन्द सागर की बाढ़ से भक्तों को बाहर निकाला और सबको इस आनन्दोत्सव का महाप्रसाद सुव्यवस्थित रूप में वितरित करने के लिये सेवाधारियों को आदेश दिया. और इसीके साथ भण्डारघर के अतिरिक्त सत्संग सभागार में भी प्रेमीजनों ने बैठकर बाबाजी का भोजनप्रसाद सश्रद्धा ग्रहण किया. सायंकालीन सत्संग सभा भजन संध्या के बाद समूचे श्री दरबार को दीपों की रोशनी से जगमग किया गया. सारे जयपुर नगर में प्रेमी भक्तों ने अपने अपने घरों पर भी ११६ दीपक में ज्योत जगाकर दीपोत्सव मनाया. जन्मोत्सव में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज, स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, सन्त हरीओमलालजी, सन्त दयाप्रकाशजी, संत हंसप्रकाशजी, सन्त मोनूरामजी व कई महापुरुषों ने भक्तों को अमृत पिलाया. इसी के साथ इस जन्मोत्सव का आनन्दोत्सव पूर्ण हुआ.

बड़ौदा– संत कंवर कालोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रममें पूज्य स्वामी अशोकप्रकाशजी महाराज के पावन सानिध्य में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हजारों प्रेमियों ने सद्गुरु महाराजजी का जन्म महोत्सव मनाया. बड़ौदा में ही संत कंवर कालोनी में स्थापित मीरा कृष्ण मंदिर में संत संजयजी के सानिध्य में ५ से ११ जुलाई तक श्री गुरु ग्रंथ साहिब के तीन अखण्ड पाठ जन्मोत्सव के उपलक्ष में रखे गये .

बुरहानपुर– हमारे प्रतिनिधि अशोक कुमार चावला के अनुसार पंचदिवसीय मेले के अन्तर्गत शोभायात्रा के आयोजन ने सूर्यपुत्री माँ तापी नदी के पावन तट पर स्थित बुरहानपुर नगर को टेऊँराममय बना दिया. आगे श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा लिये हुए आकर्षक वेशभूषा में घुड़सवार उसके पीछे डीजे की धुन पर भजन मण्डली आचार्यश्री के गुणगान द्वारा नगरवासियों को अमृत बाँट रही थी. आचार्यजी के अमृत वचनों दोहों युक्त बैनर प्रेमियों नगरनिवासियों को सत्कार्यों के लिये प्रेरणास्त्रोत थे. सिन्धियत की शान उल्हासनगर की शहनाई आचार्य जी के शानदार रथ की अगवानी कर रही थी, शोभायात्रा का नेतृत्व इन्दौर आश्रम के संत शम्भूलालजी कर रहे थे. इस प्रकार पांच दिनों तक संत शभूंलाल की उपस्थिति में बुरहानपुर के प्रेमियों ने जन्मोत्सव में महाआरती के साथ हवन ध्वजावंदन व आम भण्डारे के आयोजन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया .

धमतरी– ६ जुलाई को बच्चों द्वारा प्रस्तुत राधकृष्ण नृत्य मे सारे सत्संग परिसर को वृन्दावन बना दिया. अभी इसी वर्ष उद्घाटित प्रेम प्रकाश आश्रम की छटा इन पाँच दिनों में देखने लायक थी. ११६ वें जन्मोत्सव ७ से ११ जुलाई तक भक्तिमय हरिरस से पूर्ण उल्लासित वातावरण था. ११६ दीपों का मनमोहक दृश्य आकर्षण का केन्द्र रहा. अन्तिम दिन की सायंकालीन सत्संग सभा में बैण्ड शहनाई की मधुर धुनों पर खण्डूअ वारो के सामूहिक गायन व जन्म बधाई गीतों पर एक हजार से भी ऊपर सम्मिलित प्रेमी भक्त झूम उठे. संत टेकचन्दजी ने भाई अशोक, दादा बालचन्दजी व प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, प्रेम प्रकाश महिला व बालक मण्डली के सहयोग से समस्त धमतरी नगरी व कुरुद, चारामा के प्रेमी भक्तों को आनन्दोत्सव के आनन्द सागर की सैर करायी .

इन्दौर– नवयुवक मण्डल द्वारा पाँचो दिन आश्रम को अलग अलग प्रकार से सजाना, बालिका मण्डली का नित्य रंगोली सजाकर उस पर प्रतिदिन ११६ दीपक जलाना इस आनन्द सागर की खासियत रही. संत शम्भूलालजी के सानिध्य में जन्मोत्सव के उपलक्ष में प्रेम प्रकाश आश्रम, काटजू कालोनी द्वारा सद्गुरु टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता में ५० से भी अधिक भक्तों ने भाग लिया. पहिले तीन पुरस्कारों के अतिरिक्त चार सांत्वना पुरस्कार भी दिये गये, सभी प्रतियोगियों को गुरुदेव भगवान का आशीर्वाद व प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये. अन्तिम दिन शहनाई की धुन पर दीपोज्जवलन के साथ केक काटकर संगत का मुंह मीठा कराया गया .

बान्दा– वनवासी भगवान राम की तपःस्थली चित्रकूट के समीप उ.प्र. का बान्दा नगर- यहाँ के सिन्धी गुरुद्वारे में आचार्यश्री के अवतरण की खुशी में विभिन्न प्रकार के फूलों से एक भव्य झूले को बनाया गया था, जिसमें सुखों के दाता शान्ती के भण्डार अपनी कृपादृष्टि से सभी को निहाल करने वाले सर्व उपमा योग्य आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का अवतरण दर्शाया गया. आनंद सागर की बाढ़ में भक्तजन भाई अमरलालजी व मुखी परमानन्दजी, मानिकचंदजी के साथ ऐसे डूबे कि तन मन का रहा न भान. पंचदिवसीय मेले में महिलाओं का डाँडिया नृत्य व ११६ दीपकों के तेजस्वी प्रकाश से बांदा नगरी रोशन हो उठी .

कामठी– नागपुर जिले के एक छोटे शहर कामठी से अशोक रावलदास चावला ने बताया कि यहां पर भी आनन्दोत्सव मनाया प्रेमी भक्तों ने स्वामी अनन्तप्रकाशजी महाराज के सानिध्य में. आकर्षक झूले में आचार्यश्री के अवतरण समय दर्शन से प्रेमी भावविह्ल होकर जयजयकार करने लगे. दो दिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावन्दन व ११६ दीपकों के दिव्य प्रकााश से सभीके हृदय खुशी से लबालब हो गये. पाठों के भोग व भण्डारे के साथ आनन्दोत्सव को पूर्णता मिली .

हिसार– प्रेम प्रकाश महिला मण्डली ने हरियाणा के इस छोटे से नगर में भी धन गुरु टेऊँराम नाम की धूम मचा दी. हिसार शहर की महिला व पुरुष भजन मण्डलियों ने नाम महिमा की पाँचों दिन ऐसी तो मौज की कि सारा हिसार शहर आनन्दोतसव की गंगा में पावन हो गया. पूरे आश्रम को रंग बिरंगी पताकाओं से सजाया गया था उस पर रंगीन विद्युतीय झिलमिलाती सजावट तो मनमोहक थी ही. फूलों झालरों से सजाये पालने में जब अवतरण की लीला दर्शायी गयी तो सब गदगद होकर कहने लगे- बोल प्यारा बोल, सांई टेऊँराम बोल घड़ी घड़ी बोल, प्यारा, सांई टेऊँराम बोल, दीपोत्सव का कलांकन्द का केक काटकर सबका मुख मिठास से भर दिया गया. आश्रम की संचालिका माता रामप्यारी देवी ने उपरोक्त जानकारी दी.

अहमदाबाद– कोतरपुर में निर्माणाधीन विशाल प्रेम प्रकाश आश्रम में किस तरह रही आनन्दोत्सव की बाढ़. इसका अहिवाल दिया है हमारे अहमदाबाद के प्रतिनिधि श्री नरोत्तम जवाहरलाल परियानी ने. आचार्यश्री व गुरुदेव भगवान के स्वरुपों को आकर्षक रूप से सजाया गया था. महाराजजी के आगे छप्पन भोग प्रस्तुत किये गये, दिन भर मीठे चावल व शरबत से सबकी सेवा की जा रही थी. महाआरती के आयोजन में ११६ भक्तों का सामूहिक आरती करना लोगों को अभिभूत करने वाला मनभावन दृश्य था. बस चारों ओर खुशी के माहौल से सभीआनन्दित हो झूमने गाने में मस्त थे.

ब्यावर– नन्द नगर में स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में संत भोलानाथ के संग प्रेमी भक्त ऐसे तो आनन्द सागर में डूबे कि तन मन का भान तक न रहा उल्लासमयी इस डूब में. हमारे प्रतिनिधि दादा श्री नानकरामजी बताते हैं कि सारा आश्रम परिसर ही नहीं अपितु पूरी कॉलोनी दीपोत्सव की झिलमिलाती रोशनी से जगमग थी. महाराजश्री के अवतरण की ख़ुशी में विशेष सत्संग-भजन सभाओं में बिखरे आनन्द को पूरा पूरा समेटा ब्यावर वासियों ने. इस आनंद को दोगुना किया ग्वालियर के संत हरीओमलाल जी ने, अजमेर से एक दिन ब्यावर आकर .

ग्वालियर– प्रेम प्रकाश आश्रम में पंचदिवसीय मेले में स्थानीय आश्रमों की महिला भजन मण्डलियों के गायन के साथ संत हरीओमलालजी, दादी लाजवन्तीजी व सन्त प्रतापरायजी, दादा दयालदासजी द्वारा महाराजश्री के लीलाओं का गुणगान कर आनन्दोत्सव मनाया गया. नवयुवक मण्डली व महिला मण्डली ने आश्रम की मनमोहक सजावट करके स्वरूपों को आकर्षक ढंग से सजाया कि सब मंत्रमुग्ध हो गये. भजन गायन पर पांचो ही दिन ऐसी नाच गाकर धूम मचाई भक्तों ने कि दो हजार से भी अधिक संख्या में उपस्थित प्रेमी अपने अपने स्थानों पर ही झूम उठे. आम भण्डारे के साथ जन्मोत्सव कार्यक्रमों को पूर्णता दी गयी .

मुरैना– परम्परानुसार दादा स्वर्गीय श्री वसणारामजी के

निवास पर प्रकटोत्सव की धूम रही. संत प्रतापराय व सुरेश सांवल ने आचार्यश्री के मंगलमयी जीवन दर्शन को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से भक्तों को सुनाया .

झाँसी, दतिया, डबरा– में भी संत प्रतापराय व संत परसरामजी के सानिध्य में जन्मोत्सव का आनन्द प्रेमियों ने लिया. रायपुर शैलेन्द्र नगर व भाटापारा के माता देवालयपारा में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों में भी आनन्दोत्सव के सागर में बाढ़ आने के समाचार हैं. सूरत हो या जामनगर, नवसारी, गान्धीधाम, जूनागढ़, दाहोद, गोधरा, बैरागढ़ भोपाल हो या कलकता हो मद्रास,हैदराबाद, मुम्बई, पूना, पिम्परी, कोल्हापुर, सांगली, लोनावाला, फरीदाबाद, पलवल, पिनगंवा, हथीन, राजपुरा, पटियाला पंजाब हो या नेहरु नगर दिल्ली सभी आश्रमों के अतिरिक्त ऐसी जगहों पर जहां पर बहुत थोड़ी संख्या में भी प्रेमी रहते हैं.भारत की राजधानी दिल्ली के मलकागंज के प्रेम प्रकाश धाम में भी आनन्द की गंगा बही. उल्हासनगर, नागपुर, गोन्दिया, भानुप्रतापपर, राजनांदगांव, अकोला, भुसावल, अकलतरा, आगरा के प्राचीन प्रेम प्रकाश आश्रम व केदार नगर आश्रम पर भी मौज ही मौज रही. कानपुर, लखनऊ, फैजाबाद, इलाहाबाद, वाराणसी सहित सम्पूर्ण क्षेत्रों मेंजन्मोत्सव का आनन्द भक्तों ने लूटा. विदेशों में लासपालमास स्पेन, न्यूयार्क अमेरिका, जाकरता, दुबई, चाइना, लंदन, मनीला , सिंगापुर के अतिरिक्त हांगकांग से सन्त नामदेवजी नेअवतरण दिवस की बधाई देते हुए वहां मनाये गये आनन्दोत्सव की जानकारी दी.

छठी महोत्सव

६ जुलाई शनिवार को बाबा टेऊँराम का छठी महोत्सव पावन धाम श्री अमरापुर स्थान में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पावन सानिध्य में धामधूम से मनाया गया. सायंकालीन सत्संग भक्ति संध्या में अनेक भक्तजनों ने मंगल-गीत गाये तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने " जागियो कृष्णा जो पूर्व कर्म-स्वामी टेऊँराम वरितो जन्म" भजन गाकर आचार्यजी के बाल अवतार का चित्रण अपनी अतुल ओजस्वी वाणी में किया. सत्संग के बाद खीर प्रसादी का वितरण हुआ. इस बीच मनमोहक सुन्दर झूला झाँकी बनायी गी. फूलों से सजे सुन्दर पलने में बाल अवतार बाबा टेऊँरामजी के मोहक रूप के दर्शन पाकर समस्त प्रेमी आनन्दित हो नाचने झूमने लगे.तन मन से नाच रहे-देव और परियाँ,सांई टेऊँराम झूले झूलनि के पालना.

गुड़िया भरत जेठवानी, जयपुर से एवं कार्यालय डेस्क

घर-घर जले 119 दीप

जयपुर- प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के ११९ वें प्रकटोत्सव पर सारे संसार भर के प्रेमप्रकाशियों में एक विशेष उल्लासमयी आभा फैली हुई थी. राजस्थान की राजधानी लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी तो गुलाब की तरह महकी .

११ जुलाई सोमवार को बाबा के अवतरण दिवस पर जयपुर महानगर के गली गली कूचे कूचे में बाबा के नाम की मधुर गूंज सुनायी दे रही थी. सभी कॉलोनियों में सायंकाल को रंगोली बना कर रात को विद्युतीय सजावट के साथ ११९ दीपों का झिलमिलाता प्रकाश जयपुर वासियों को दीपावली का बोध करा रहा था. और सच में थी भी हम प्रेम प्रकाशियों की दीपावली, तो भला ऐसे सुनहरे मौके पर कौन पीछे रहता. खूब आतिशबाजी जला कर मंगलगीत गाये गये, मोहल्ले रिश्तेदारों में मिष्ठान्न वितरित किया गया. मालवीय नगर में रहने वाली गुरुभक्त सोना बच्चानी ने कालोनी में ही बाबाजी की एक सुन्दर झाँकी बनायी. आकर्षक नयनाभिराम सजावट से ओत प्रोत मोहक झाँकी का हजारों की तादाद में भक्तजनों ने दर्शन किया. पारवानी मुरलीधर ने सांई टेऊँराम लीला तेरी तू ही जाने कैसेट की मधुरकारी गूंज से पूरे मोहल्ले को टेऊँराममय बना दिया .

राजा पार्क सिन्धी कॉलोनी के स्वामी सर्वानन्द पार्क में बैण्डवादन आतिशबाजी रंगारंग लाईटिंग महाप्रसादी दीपमाला भजन सत्संग बधाई गीत महारास आदि से भक्तिमय वातावरण में आनन्दोत्सव मनाया गया. इसी कालोनी के रहने वाले देवानन्द चन्दनानी, माया लालचन्दानी, मीनू गुरबानी, हेमा चन्दवानी, राजू-गुड़िया मूलचन्दानी, भागवानी परिवार, जीवनानी एवं जेठानी परिवार सहित सभी भक्तों ने अपने पूरे भवन की लाईटिंग डेकोरेशन दीपमाला सजाकर प्रसाद वितरण किया. ब्रह्मपुरी की गुरुनानक कॉलोनी को तो दीपावली की भाँति सजाकर दीपोत्सव मनाया गया, बड़ा ही मनोरम दृश्य था. कीमतराय भागवानी परिवार ने सुन्दरतम मंदिर बनाकर आचार्यश्री की झाँकी के दर्शन कॉलोनी निवासियों को कराये. कविताजी ने भी अपने निवास की मनोहर सजावट कर मंगलगीत गायन से सबको बधाई दी. नाहरी का नाका सिन्धु नगर में लक्ष्मणदास के आँगन में रंगोली दीपसजावट व कैसेट से आचार्यश्री के मधुर नाम की गूंज ने वातावरण को आनन्दमयी बना दिया. कन्हैयालाल रोचवानी परिवार ने तो साक्षात् खण्डू गाँव की छोटी सी लेकिन प्रभावी झाँकी ने सबका मन मोह लिया .

जयपुर का कोना कोना प्रकटोत्सव पर भक्तिमय वातावरण का संचार कर रहा था. मानसरोवर के झूलेलाल मंदिर में भी आनंद छाया रहा. बसन्त बहार, दुर्गापुरा, बनी पार्क, सांगानेर, ब्रह्मपुरी, आदर्श नगर, शास्त्री नगर, जवाहर नगर, विद्या नगर, भाकरोटा, शंकर नगर, अग्रवाल फार्म, कमला नेहरु नगर, झोटवाड़ा, मुरलीपुरा आदि शहर की सभी कॉलोनियों मंदिरों में दीपमाला, विद्युतीय सजावट रंगोली आतिशबाजी बैण्डवादन प्रसाद वितरण कर सारे नगर को टेऊँराममय बना दिया भक्तों ने . संसार भर के समस्त गुरुभक्त प्रेम प्रकाशीयों को अनन्त मंगलकारी बधाईयां. सभी के मन गुरुभक्ति से सदैव आलोकित रहें, एवं सभी भक्तजन सेवा सत्संग सुमरण की त्रिवेणी में डूबे रहें.

गुरुकृपा,अमरापुर जयपुर

श्री अमरापुर स्थान की धार्मिक सामाजिक गतिविधियां

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की असीम कृपा से श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरा स्थान द्वारा अनेक धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक कार्य निःस्वार्थ भाव से किये जा रहे हैं. जिससे भक्तजन उनका उपयोग कर लाभान्वित हो रहे हैं

धार्मिक सेवाः श्री अमरापुर स्थान में भक्तिमय वातावरण से ओत-प्रोत प्रतिदिन प्रभात वेला व सायंकालीन प्रार्थना-सत्संग-प्रवचन-आरती, पूजा-पाठ आदि नि होता है. इसीके साथ साथ विशेष उत्सव मकर संक्रान्ति, बसन्त पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, चेटीचण्ड, चैत्र मेला, गुरु पूर्णिमा, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, दीपावली, कार्तिक उत्स एव महाराजश्री की पुण्यतिथि व जन्मोत्सव पर सत्संग प्रवचन, पाठों का आयोजन, हवन, प्रसादी वितरण एवं विशाल भण्डारे का आयोजन होता है.इसी के साथ समाधि स्थ पर प्रत्येक शनिवार व गुरुवार को पुष्पों का श्रृंगार एवं उत्सवों पर बड़ी मनमोहक झाँकियां भी श्री दरबार में सजायी जाती.हैं

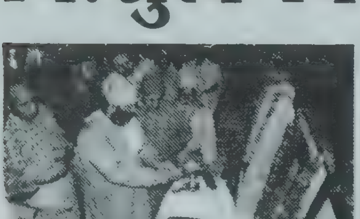
आर्थिक सेवा कार्यः धार्मिक आध्यात्मिक उत्थान के साथ समाज के निर्धन परिवारों के सहायतार्थ अनेक सेवा कार्य सुचारु रूप से संचालित हैं. सबको शिक्षा मि इसी भाव को ध्यान में रखकर आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों को फीस, गणवेश, कापी-किताबें आदि की व्यवस्था भी मण्डल द्वारा उपलब्ध करायी जाती है. इस वर्ष भी अगस्त को राजा पार्क सिन्धी कालोनी के राजकीय सिन्धी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय फतेहटीपा के जरुरतमंद विद्यार्थियों को संत श्री मोनूरामजी व श्री अमरापुर नवयुव मण्डल के कार्यकर्ताओं ने लेखन-पाठय सामग्री वितरित की. स्कूल फीस व गणवेश भी बालकों को दिये गये .

चिकित्सा क्षेत्र जो कि आज सर्वाधिक खर्चीला क्षेत्र बन गया है, इस क्षेत्र में भी जरुरतमंदो को दवाईयां, रक्त, आर्थिक राशि का भुगतान, अस्पताल में निःशुल्क बेड Bed की व्यवस्था भी है. निर्धन असहाय परिवारों के पालन पोषण हेतु प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को राशन सामग्री जिसमें चावल, आटा, आलू, प्याज, तेल, नग राशि एवं समय अनुसार चादर-कम्बल इत्यादि दैनिक उपयोगी वस्तुएं भी संस्था द्वारा दी जाती हैं. बेसहारा माताओं को वर्ष में दो बार सिलाई मशीन भी उपलब्ध करायी जात है जिससे वह स्वावलम्बी बन कर अपना जीवन निर्वाह कर सकें. विवाह जैसे शुभ मंगल कार्य में भी आर्थिक धन की व्यवस्था मण्डल द्वारा की जाती है .

सामाजिक सेवा कार्यः धार्मिक-आर्थिक कार्यों के साथ सामाजिक कार्यों में भी मण्डल अग्रणीय रहता है. प्रत्येक वर्ष मन्दिर परिसर मे तीन बार रक्तदान शिवि निःशुल्क नेत्र चिकित्सा आपरेशन शिविर, चिकित्सा-सर्जीकल शिविर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा शिविर भी आयोजित किये जाते हैं. संस्था द्वारा संचालित अने स्थायी सामाजिक कार्य यथा- स्वामी टेऊँराम पॉली क्लीनिक, स्वामी सर्वानन्द डिस्पेन्सरी, स्वामी टेऊँराम जल सेवा(जल सेवा कक्ष), सद्गुरु टेऊँराम गौशाला (गौ-सेवा), स्वा टेऊँराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर, स्वामी हरिदासराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर आदि के माध्यम से निरन्तर जारी हैं.

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

अमरापुर जयपुर– मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की असीम कृपा से सर्वहारा वर्ग के लिये रविवार २४ जुलाई २००५ को श्री अमरापुर स्थान



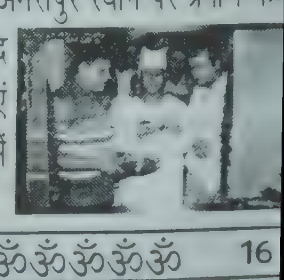
एक विशाल निःशुल्क चिकित्सा सर्जीकल शिविर आयोजित हुआ. शिविर का उद्घाटन पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज दीप प्रज्जवलित करके किया. शिविर में यूरोलोजी विशेषज्ञ डॉ. एस.एल.तोलानी, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश चान्दवानी, क्षय रो विशेषज्ञ डॉ. बी.एल.जेठवानी, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. अनूप जूरानी, नाक कान व गला विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश चन्दनानी, मधुमेह रो विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश केसवानी व फिजीशियन डॉ. विवेक द्विवेदी द्वारा १२७६ रोगियों की जांच कर उनको उचित परामर्श व निःशु दवाईयां दी गयी. ऑपरेशन योग्य मरीजों को मोनीलेक अस्पताल में भर्ती कर उनके निःशुल्क आपरेशन कराये गये. शिविर आवश्यकतानुसार खून, मूत्र, एक्सरे, सोनोग्राफी व ई.सी.जी. की निःशुल्क तत्काल जांच की गयी. शिविर में सेवा व्यवस्थाओं सुचारु बनाने में श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल व श्री प्रेम प्रकाश महिला मण्डली के समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा सेवा की जा रही थीं. सभी रोगियों व उनके साथ आये परिज के लिये भोजन प्रसादी की व्यवस्था भी अमरापुर दरबार की ओर से की गयी थी .

स्वामी टेऊँराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर

जयपुर– नाहरी का नाका स्थित स्वामी टेऊँराम कम्प्यूटर सेन्टर का नया सत्र ८ अगस्त को शुरू किया गया. सेन्टर में दो महीने का बेसिक कोर्स सिखाया जाता है. अगला सत्र अक्टूबर में शुरू होगा, जिसके फार्म अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में अमरापुर स्थान व सेंटर पर भरे जायेंगे. इसके पूर्व ग्रीष्मकालीन शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त सैकड़ों विद्यार्थियों को अमरापुर स्थान पर प्रमाण पत्र व पुरस्कार दिये गये .

स्वामी हरिदासराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर

जयपुर– सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज की पावन समृति में २ मई २० से कार्यरत मालवीय नगर में स्थित स्वामी हरिदासराम निःशुल्क कम्प्यूटर सेन्टर के प बैच में ६० विद्यार्थियों ने बेसिक शिक्षा प्राप्त की. १५जून से प्रारंभ दूसरे बैच में भी छात्र-छात्राओं ने आधुनिक ज्ञानार्जन किया. सभी को अमरापुर स्थान पर प्रमाण पत्र पुरस्कार दिये गये. कमल कुमार संगतानी, आनन्द कुमार संगतानी एवं विजोय वार्गीय ने अपनी सेवाएं श्रीमती भगवतीदेवी के घर में संचालित मंदिर परिसर में कम्प्यूटर सेन्टर को दी.



या त्रा द र्श न

सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

अजमेर में सद्‌गुरु टेऊँराम जन्मोत्सव

अहमदाबाद में स्वामी हरिदासराम सेवा केन्द्र का शुभारंभ

जयपुर 6 से 7 जुलाई

गुरुधाम श्री अमरापुर में आचार्यश्री के अवतरण दिवस आनन्दोत्सव के समारोह का शुभारम्भ पूज्यश्री द्वारा किया गया.

अजमेर 8 से 11 जुलाई

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के पावन प्रकटोत्सव का मुख्य कार्यक्रम तपोधन महर्षि सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के समय से ही पूज्य स्वामी बसन्तरामजी महाराज के यहां प्रेम प्रकाश आश्रम, दिल्ली गेट, अजमेर में मनाया जाता है. उसी परम्परा को कायम रखते हुए वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज आचार्यश्री के ११९वें अवतरण दिवस का मुख्य महोत्सव मनाने के लिये श्री अमरापुर स्थान से ८ जुलाई को सन्त मण्डली के साथ दोपहर १:३० बजे चलकर सायं ४ बजे दिल्ली गेट आश्रम पहुंचे. पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज के सानिध्य में उपस्थित हजारों भक्तजनों ने महाराजश्री का पुष्पहार पहिनाकर व फूलों की वर्षा कर आचार्यश्री के गगनभेदी जयघोष के साथ भव्य स्वागत किया.

७ से ११ जुलाई तक मनाये जा रहे आचार्यश्री के ११९ वें प्रकटोत्सव के प्रथम दिन परम्परानुसार पंचदिवसीय पाठ रखे गये, इसी के साथ हवन यज्ञ का शुभारम्भ भी हुआ. द्वितीय दिवस ८ जुलाई को सायं ५ बजे पूज्य लाल सांई की ज्योति पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज द्वारा प्रज्जवलित की गयी. इसीके साथ ५:३० बजे जन्मोत्सव के उपलक्ष में विशाल चल समारोह आश्रम से पूज्यश्री व सन्तो के पावन सानिध्य में निकला. सद्‌गुरु भगवान व लीलावतारों के विभिन्न स्वरुपों की झाँकियों के साथ बैण्ड बाजे एवं शहनाई की मधुर धुनों के संग हजारों की संख्या में प्रेमीजन सद्‌गुरु भगवान के प्रेम में झूमते हरिनाम रस का पान करते चल रहे थे. जुलूस में पूज्यश्री व स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज एक शानदार अमरापुर रथ पर विराजमान होकर नगरवासियों को दर्शन दे रहे थे इसी रथ पर जन्मोत्सव में सम्मिलित होने को आये शिवशान्ति आश्रम लखनऊ के सन्त मोहन सांई (सुपुत्र सांई चाण्डूरामजी) व संत दयाप्रकाशजी, संत झामनदासजी भी बैठे हुए थे. मार्ग में अनेक व्यवसायिक व सामाजिक धार्मिक संगठनों द्वारा पूज्य गुरुवर व सन्त मण्डली का स्वागत पुष्पवर्षा करके किया जा रहा था, अनेक स्थानों पर जुलूस के स्वागतार्थ भव्य स्वागत द्वार बनाये गये थे, प्रसाद-जल-शरबत का वितरण तो अबाध गति से स्वागतकर्ताओं द्वारा किया ही जा रहा था. नगर परिक्रमा कर रात्रि ८:३० बजे चल समारोह का विसर्जन आश्रम पर हुआ.

१० जुलाई को प्रातः ७ से १० बजे तक ७६ बालकों का सामूहिक उपनयन संस्कार पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्रीजी ने वेदविधि अनुसार सम्पन्न कराये. यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार से संस्कारित बच्चों को पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि सदैव माता पिता बड़ों का सम्मान करने के साथ उनकी आज्ञा पर चलें, निषिद्ध वस्तुओं माँस, मदिरा, तम्बाकू, गुटका का सेवन जीवन में कदापि न करें. विद्याध्ययन के साथ धार्मिक विद्या भी पढ़ें, अपने जीवन में सद्‌गुणों को धारण कर परिवार, समाज, देश की सेवा करें.

११ जुलाई तक प्रतिदिन प्रातः सायं सत्संग ज्ञान यज्ञ में सद्‌गुरु महाराज व सन्त महापुरुषों के मुखारविन्द से निकली ज्ञानगंगा में हजारों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगायी. ११ जुलाई को प्रातः ७ से ९ बजे तक हवन, श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावन्दन के पश्चात् आचार्यश्री को ५६ प्रकार के व्यंजनो का भोग लगाकर सत्संगोपरान्त आम भण्डारे का आयोजन हुआ.

आज आचार्यश्री के अवतरण दिवस पर बड़े ही उमंगपूर्ण हर्षोल्लास का वातावरण था, प्रेमी भक्तों सहित महापुरुषों के हृदय भी खुशी से आह्लादित थे. इसी उत्साह के साथ प्रातः ११९ दीपकों में ज्योति जगाकर उन्हें आरती की थालियों में सजाकर पूज्यश्री के साथ सन्त मण्डल व प्रेमियों का सामूहिक रूप में आचार्यजी की महाआरती करना जन्मोत्सव का विशेष आकर्षण रहा .

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के अतिरिक्त संत हरिओमलालजी, स्वामी चेतनकृष्णजी, संत दयाप्रकाशजी, संत झामनदासजी, संत बहिन पुष्पाजी व भगत शंकरलाल, भगत किशनलालजी भी महोत्सव में सम्मिलित होने वालों में प्रमुख थे .

आनन्दोत्सव अवसर पर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने प्रेमियों को अमृतरस पिलाते हुए कहा कि हमें अपनी दिनचर्या में भक्ति एवं सत्संग को दैनिक कार्यों की भांति सम्मिलित कर लेना चाहिये. भगवत् प्रीति भी ऐसी होनी चाहिये जैसे माता पिता अपने बालक से प्रीत करते हैं. इसी विषय पर पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने बताया कि भगवान श्रीराम ने शबरी को समझाया कि भक्ति-सत्संग को जीवन में ऐसे अपनाओ जैसे जीवन की अन्य नित्य क्रियाएं. सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी भक्ति-सत्संग को अपनी दैनिक चर्या में शामिल कर मास्टर आसूरामजी को अपना सद्गुरु बनाकर उनसे मिले नाम मंत्र का अखण्ड जाप कर परम पदवी को प्राप्त किया .

सद्गुरु महाराज जी ने सत्संग सभाओं में ज्ञानामृत की वर्षा करते हुए बताया कि- गए जब पढ़ने के लिये कण्ठ दो अक्षर उन किए. कहा है ओम में आराम, नहीं है और पढ़ने से काम.पढ़ें क्या पढ़ा पढ़ाया था .

सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज जब स्कूल पढ़ने गये तभी उन्होंने ओम शब्द याद कर उसे जीवनचर्या में आत्मसात कर लिया. हमें भी अटूट विश्वास श्रद्धा के साथ अपने जीवन में गुरुदेव के दिखाये सत्मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करना चाहिये .

हरिमेली हैं संतजन, हरि से देत मिलाय.
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरणी आय.
संतनि पहिंजो रूप सुञातो, पूरण पद खे पातो.
निसंगु थी निर्मान.
संतनि तां कुरिबानु, करियां तन मन प्रा

गुरु महाराज शरण में आये हुए जीवों को अभय प्रदान करके उनको नाम मंत्र देकर प्रभु परमात्मा से आत साक्षात्कार का सच्चा मार्ग बताते हैं. जिज्ञासु भी मंत्र निरन्तर अभ्यास से उस परमसत्ता के करीब पहुंचते है इसलिये स्वामीजी कह रहे हैं कि इस असार संसार में आक भी हमने नाम स्मरण सत्संग नहीं किया तो हमारा आना पशुवत ही होगा अतः इस दुर्लभ मानव देह को प्राप्त कर सत्कार्य करते हुए रोम रोम से उस परमात्मा का चिन्तन करें तो संसार की भयावह अशान्ति की अग्नि से शान्ति मिले और हमारा उद्धार होगा .

अहमदाबाद 12 से 15 जुलाई 2005

अजमेर में जन्मोत्सव कार्यक्रम पूर्ण कर ११ जुला रात्रि १२ बजे आश्रम एक्स. द्वारा चलकर दूसरे दिन १ जुलाई मंगलवार को प्रातः ८:३० बजे अहमदाबाद पहुंचे प्लेटफार्म पर उपस्थित सैकड़ों प्रेमियों ने महाराजश्री व सं मण्डली के संत हरिओमलालजी, संत दयाप्रकाशजी, सं भोलानाथजी, संत लक्ष्मणजी, संत श्रीमुक्तजी व भग मूलचन्दजी का स्वागत फूलमालाएं पहिनाकर किया. यहां महाराजश्री व संत मण्डली को कारों के काफिले में प्रवास स्थ जवाहरलाल फुन्दुमल, स्वामी सर्वानन्द सोसायटी, हांसोल लाया गया. यहां पर प्रेमियों से कुछलक्षेम समाचार के पश्चा पूज्यश्री कोतरपुर मे बन रहे प्रेम प्रकाश आश्रम का अवलोक करने के लिये वहां के टस्ट्रियों के साथ गये. निर्माण कार्यों देखने के बाद महाराजजी ने दिशा निर्देश भी सेवाधारियों दिये. शाम को ५:३० से ७:३० बजे तक सत्संग प्रवास स्थल बाहर बनाये गये विशाल सत्संग मण्डप में हुआ. १४ जुलाई प्रातः कुबेर नगर में बहिन संत पुष्पाजी के बसंत कुटीर सत्संग कर प्रवास स्थल पर ८ से १० व सायं ५:३० से ७:३ तक सत्संग की ज्ञानगंगा में अहमदाबाद वासियों ने हजारों संख्या में उपस्थित होकर सत्संग-दर्शन का लाभ लिया. १ जुलाई को प्रातः ९ से १० बजे तक अंबावाड़ी के स्वाम टेऊँराम दरबार में सत्संग की ज्ञानगंगा में भक्तजनों ने डुबक लगायी .

१५ जुलाई को सद्गुरु स्वामी हरिदासरामज महाराज की पावन स्मृति में ब्लॉक ७००/१,२ अम्बावाड़ सरदार नगर में जरूरतमंदो के लिये स्वामी हरिदासराम सेव

केन्द्र का शुभारम्भ पूज्य महाराजश्री के कर कमलों से हुआ, इस अवसर पर सुश्री माया कोडवानी पार्षद व डॉ. रमेश सहित पूज्य पंचायत व विभिन्न संस्थाओं के गणमान्य लोग उपस्थित थे. इस सेन्टर पर गरीब वर्ग के लोगों को कम्प्यूटर सिखाया जायेगा साथ ही महिलाओं के लिये यहीं पर सिलाई प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गयी है. आज शाम ५ से ६:३० बजे तक सत्संग दौलतराम जेठानन्द कानपुर वाले के यहां वणी कुटीर, धनलक्ष्मी अपार्टमेंट, मणी नगर में हुआ. ७:३० बजे पूज्यश्री अहमदाबाद वासियों को आशीर्वाद देकर जयपुर के लिये रवाना हुए.

जयपुर 16 से 25 जुलाई

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के दिव्य सत्संग दर्शन से गुरु धाम नगर के प्रेमी लाभान्वित हुए. पूज्यश्री के सानिध्य में गुरु पूर्णिमा गुरु पूजा दिवस भक्त समुदाय ने उल्लासित होकर मनाया.

गुरू पूर्णिमा दिवस मनाया गया

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को सनातन संस्कृति में व्यास पूर्णिमा या गुरु पूर्णिमा कहा गया है. इस दिन गुरु अथवा आचार्य की पूजा का विशेष महत्व माना गया है. आचार्य का स्मरण हम प्रतिदिन मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः,आचार्य देवो भवः को उच्चारित करते हैं .

महाराज मनु का कथन है कि सावित्री अर्थात् विद्या हमारी माता और आचार्य हमारे पिता हैं, जीवन को संस्कृत अथवा समलंकृत तथा सर्वांग सुन्दर बनाने का कार्य गुरु अथवा आचार्य का ही है. इसी कृतज्ञता की भावना से आचार्य की विशिष्ट पूजा इसी दिन हम करते हैं. आचार्य के लिये शिष्य के मन में भगवान से बढ़कर प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिये. आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज हम प्रेम प्रकाशियों के लिये वह महामानव थे जिन्होंने लोक कल्याण व आत्म कल्याण के द्वारा हजारों प्रेमियों का मार्गदर्शन किया. आईये हम भी कलम के द्वारा गुरु दरबार चलकर गुरु महाराज का पूजन करें .

प्रातः ५ बजे जैसे ही श्री दरबार में प्रवेश किया तो गुरुदरबार को रंगोली की मनोहरकारी चित्रकारी से रंगा पाया. सत्संग सभालय में जाने पर सत्संग मंच पर अस्थायी प्रकोष्ठ में मंदिर के दर्शनों से मन प्रसन्न हो गया, इसमें आचार्यश्री सहित सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज की मनोहर प्रतिमाएं सजा कर रखी गयीं थी. वहीं श्री मन्दिर में एक आकर्षक झोपड़ी बनायी गयी थी. बातों की बनी चटाई से झोपड़ीनुमा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया था. रंगबिरंगी विद्युतचलित झॅालरों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के फूल गुलदस्ते इत्यादि से इस झोपड़ी की सुन्दरता मन को मोहने वाली थी, जिससे भक्त समुदाय की आँखे बरबस इसी ओर ही जा रही थीं. उधर समाधि स्थल पर भी पुष्प सजावट से तन मन महक उठा. श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ संतगण श्री मंदिर में महाराजश्री की प्रतिमाओं का पंचामृत से अभिषेक कर रहे थे, अभिषेक उपरांत प्रतिमाओं को नवीन आभूषणों व वस्त्रों से अलंकृत किया गया, फिर सर्वप्रथम महाराजश्री ने गुरुदेव भगवान के श्री विग्रहों को तिलक लगा कर पूजा की तथा श्रीफल व मिठाई से भोग लगाया. श्री विग्रहों के समीप ही सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज व सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज के स्वरुपों की इसी प्रकार पूजा कर भोग लगाया. इसके पश्चात् समाधि स्थल पर भी पूजन किया गया. प्रातः ५:३० बजे से शुरु हुई इस विशेष पूजा को कैमरामेनों ने भी अपने कैमरों में संजोया .

७ बजे प्रातःकालीन सत्संग सभा की शुरुआत परम्रानुसार प्रार्थना गायन से हुई. विभिन्न स्थानों से आये संतगणों ने गुरु महिमा का वर्णन कर प्रेमियों को कृतार्थ



किया. सत्यनारायण भगवान की कथा पूजा के बाद सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की अमृतवाणी का श्रवण सबने किया. इसीके साथ ही मंचासीन सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के दर्शनों से आज भक्तों की नजरें हट ही नहीं रही थीं, कारण आज महाराजश्री का आभामण्डल ऐसे तो देदीप्यमान था कि प्रेमी मंत्रमुग्ध हो बस अपलक निहारे जा रहे थे. जब स्वामीजी ने अपनी ओजस्वी सारगर्भित वाणी में गुरुदेव व आचार्यश्री की महिमा का गुणगान किया तो भक्त समुदाय भाव विभोर हो उठा, गुरु प्रार्थनाष्टक के पाठ के साथ सभी संतो व प्रेमियों ने आचार्यश्री की पूजा अर्चना की. इसी के साथ सद्गुरु स्वमी सर्वानन्दजी महाराज की प्रतिमा को एक सजे हुए चौपहिया वाहन पर रखकर श्रीदरबार की तीन बार परिक्रमा की गयी तत्पश्चात् आम भण्डारे में सभी भक्तों ने पावन प्रसाद पाया .

इसी प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में गुरुपूजा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी इस दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित कर गुरुपूजा का महान पर्व मनाया गया.

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-१८

प्र.१ जन्माष्टमी पर किस भगवान की पूजा-अर्चना होती है एवं यह उत्सव कब मनाया जा रहा है?
उ. ....
प्र.२ प्रेम प्रकाश सन्देश जुलाई अंक के पृष्ठ ७ पर आधारित लेख के अनुसार "आत्मज्ञान" किसके द्वारा प्राप्त होता है?
उ. ....
प्र.३ प्रेम प्रकाश सन्देश जुलाई अंक के पृष्ठ २ के अनुसार भक्तों को किस प्रकार की उपमा दी गयी है?
उ. ....
प्र.४ प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का आलेख किसके द्वारा लिखा गया (प्रेम प्रकाश सन्देश, पृष्ठ १५ के आधार पर)
उ. ....
प्र.५ देशभर में कौन से दिन ११६दीप जलाकर किस महापुरुष का अवतरण दिवस मनाया गया?
उ. ....
प्र.६ श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित "सांई टेऊँराम जीवन दर्शन प्रतियोगिता" में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार किसे दिया गया?
उ. ....
प्र.७ तीन सौ सठ वेदान्त मत......... पत्रिका के पृष्ठ ७ के आधार पर दोहे को पूरा करो?
उ. ....
प्र.८ गुरु गोविन्द दोनो खड़े.......... कबीरदास के पद को पूरा करो?
उ. ....
प्र.९ पार करत भव सिन्धु से............ साई टेऊँराम अमृतवाणी के दोहे को पूरा करो?
उ. ....
प्र.१० जगन्नाथपुरी धाम में किस महापुरुष का कौनसा जन्मोत्सव मनाया गया?
उ. ....

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-17 के सही उत्तर

(१)सन्तोष धन (२) गुरु बिन ज्ञान न होय, कहे टेऊँ सत्गुरु बिना मुक्ति न पावे कोय (३) २१ जुलाई गुरुवार (४) २८वीं पुण्यतिथि (५) प्रेम स्वरुप सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज (६) ५००से अधिक भक्त (७) दोहावली में १२१२ दोहे लिखे हैं (८) प्रेम प्रकाश सन्देश (९) शुक्रवार २६ अगस्त से मंगलवार ३० अगस्त २००५ तक (१०) आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज.

गुफा मे तपस्वी बाबा टेऊँराम महाराज के दर्शनों को उमड़े श्रद्धालु

पुण्यभूमि श्री अमरापुर धाम; ७ से ११ जुलाई तक भोर से रात्रिपर्यन्त लम्बी लम्बी कतारें. सबके मन की अभिलाषा यही कि जैसे भी हो तपस्वी बाबा टेऊँरामजी व बाबा भोलेनाथ जी के दर्शन करके मन की मुरादें पूरी करें. गुफा में प्रवेश करने के लिये बर्फ सदृश जल कुण्ड से होकर सीड़ीयों से ऊपर पहाड़ पर चढ़ाई करके पर्वत मध्य गुफा में प्रवेश कर तपस्वी बाबा टेऊँरामजी के दिव्य दर्शन पाकर भक्त कृतार्थ हो रहे थे. अगरबत्ती धूप इत्र फुलेल की सुगन्ध से महके पर्वत वन क्षेत्र के सजीव दर्शनों से भावविह्वल प्रेमी जटाधारी भोले शंकर की जटा से निकल रही गंगा मैया को प्रणाम करके गंगाजलका आचमन करता हुआ उल्लासित मन व कृतज्ञ भाव से दर्शनों के लिये प्रभु का धन्यवाद करते हुए देखे गये. इस गुफा झाँकी को साकार रूप देने की सेवा सांगानेर जयपुर निवासी श्री रामस्वरुप शर्मा ने अपने सुपुत्रों के साथ मिलकर की. गुरुदेव भगवान का आशीर्वाद उन सहित सभी सेवाधारी भक्तों पर सदैव रहेगा.

समय परिवर्तन सूचना : संस्कार चैनल पर गत 24 जुलाई से सद्गुरु महाराज जी के सत्संग दर्शन का समय 3 बजे के स्थान पर 2.30 बजे हो गया है. अब प्रति रविवार 2.30 से 3 बजे तक संस्कार चैनल पर आप सद्गुरु महाराज जी के सत्संग दर्शन का लाभ ले सकते हैं.

साईं टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रकथा- 18

चित्रांकन, लेखन–सुधा जौहरी, जयपुर



आध्यात्मिक वर्गपहेली-21

1			ॐ	2	ॐ	3	4
	ॐ	ॐ	5			ॐ	
6	7	ॐ	8		ॐ	ॐ	
9		10		ॐ	11		
	ॐ		ॐ	12		ॐ	
ॐ	13		14		ॐ	ॐ	
15		ॐ		ॐ	16	17	
ॐ		ॐ	18		ॐ	19	

आध्यात्मिक वर्गपहेली-20 के सही हल

1 क	ल	2 श	ॐ	अ	ष्टा	4 व	क्र
ल्प	ॐ	5 नि	ष्का	म	ॐ	रु	ॐ
6 त	त्त्व	ॐ	ॐ	7 रा	व	ण	ॐ
रु	ॐ	8 ष	ड्रि	पु	ॐ	ॐ	9 रो
ॐ	10 गं	डा	ॐ	र	त्ना	12 व	ली
ॐ	13 गा	न	ॐ	ॐ	ॐ	र	ॐ
14 म	द	न	ॐ	15 सू	16 र	दा	स
17 म	त्त	ॐ	चि	22 त	व	न	ॐ

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, तिलक नगर, जयपुर

बाएँ से दाएँ :

१. चार वेदों में अन्तिम ब्रह्मा के उत्तर मुख से निकला वेद;ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र. (३)
३. 'इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगूँ धन...' टेऊँराम ने मात्र हरि नाम माँगा. (२)
५. गंगा-यमुना-सरस्वती, तीन धाराएँ. (३)
६. साक्षी चेतन रम...., जल थल पुनि आकाश (२)
८. बलराम, श्रीकृष्ण व सुभद्रा का सागर तट पर स्थित मंदिर का नगर. (२)
९. उदयपुर के निकट प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर. (४)
११. पूजा व अन्य मांगलिक कार्यों में बाँधी जाने वाली मोली. (३)
१२. अंगद के पिता व सुग्रीव के अग्रज. (२)
१३. अंगूठे व उगँली में पहनकर भजन-कीर्तन में बजाई जाने वाली झांझ. (४)
१५. सांवले वर्ण वाले मोहन. (२)
१६. पाप, अनाचार. (३)
१८. वृक्ष, जिसके नीचे सावित्री ने सत्यवान को यमराज से माँगकर पुनर्जीवन दिया. (२)
१९. इन्होंने मीरा के लिए विष का प्याला भेजा. (२)

ऊपर से नीचे :

१. हिम से बने शिवलिंग का कश्मीर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ. (५)
२. दक्षिण भारत की प्रसिद्ध पवित्र नदी. (३)
४. मन, वचन व कर्म. (३.२.३.)
५. कामाख्या देवी की एक मूर्ति, बांग्लादेश से से सटा भारत का एक राज्य. (३)
७. इष्ट देव भगवान का...सिर पर होतो क्या चिंता(२)
१०. श्रीकृष्ण का जन्म इसी युग में हुआ. (३)
११. भक्त वत्सल भय हरण हरि, करुणा शील निधान, कह टेऊँ....काल में, लाज राख भगवान. (२)
१२. माता कौशल्या ने भगवान के अनन्त रुप से भयभीत हो.... रूप धारण करने को कहा. (२)
१३. लक्ष्मी देवी इसी पुष्प पर विराजती हैं. (३)
१४. शिव-शंकर का प्रलयंकारी नृत्य. (३)
१७. पृथ्वी,जिस पर पाप बढ़ने पर हरि अवतार लेते हैं.(२

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-20 व आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-17 के सही हल भेजने वालों के नाम

जयपुर से-प्रेम प्रकाशी ज्योति (साक्षी)माखीजा, कविता-अशोक पुरसानी, शंकरलाल सतवानी,**अजमेर से**-प्रेम प्रकाशी विशनी जेसवानी, चतुरी जेसवानी, **कोटा से**-प्रेम प्रकाशी मनोज मोहनलाल राजानी, नांगल मौजिया (खैरथल) से-प्रेम प्रकाशी ईश्वरी गंगाराम राजवानी,**ब्यावर से**-प्रेम प्रकाशी हितेश, संगीता, मनीष, लक्ष्मी वासवानी, जोधपुर से-प्रेम प्रकाशी रेनु-ममता दयालदास खिमनानी, भावना-दीपा बदलानी,**धमतरी से**-प्रेम प्रकाशी अनिल, रीना, प्रिया लखवानी, वन्दना, भावना, पुष्पा, मनी रोहरा, निशा-पुरषोतम वशानी, लक्ष्मी, डिम्पल, विदिशा पंजवानी, सोनल, गोलू, एकता, रेखा वाधवानी, **अहमदाबाद से**-प्रेम प्रकाशी रश्मि मनोज कलवानी, **अकलतरा से**-प्रेम प्रकाशी सुदेश लक्ष्मी, रानू बैस, दिनेश राणा, नरेश, गीता, रीना, रवि, मनीष, रोहित, ईशान, मोहिनी हरगुनानी, **भाटापारा से**-प्रेम प्रकाशी आत्माराम गोइन्दानी, अजय चैनानी, **कामठी से**-प्रेम प्रकाशी मोहनलाल-रेखा लालवानी, रवि मुलानी, विद्या वासवानी, राजकुमारी खानवानी, प्रीति-विक्रम चावला, शीला-अशोक चावला, तिरोड़ा से-प्रेम प्रकाशी कविता, पुष्पा-भगवानदास दीपानी, **इंदौर से**-प्रेम प्रकाशी नीता शामवानी, **भानुप्रतापपुर से**-प्रेम प्रकाशी माया आनन्दराम, **बैरागढ़ भोपाल** से-प्रेम प्रकाशी हीरा कन्हैयालाल सीतलानी, फैजाबाद से-प्रेम प्रकाशी राधादेवी, रायपुर से-प्रेम प्रकाशी गौरव, अमर, गंगा, नेहा, आशा, शान्ता, गीता, भागी, देवी, रिय करण, नर्मदाप्रसाद-बीना मिश्रा.

9 दिसम्बर	2005		यात्रा	मो.-098290-14850, 094140-67850
10 दिसम्बर	2005	तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
11 दिसम्बर	2005	तक	अजमेर, शीतल गीता मंदिर	मो.-098290-14850, 094140-67850
12 से 15 दिसम्बर	2005	तक	बड़ौदा,पेटलाद,आनन्द,भावनगर	मो.-098290-14850, 094140-67850
16 से 17 दिसम्बर	2005	तक	सूरत, स्वामी बसंतराम वर्सी	मो.-098290-14850, 094140-67850
18 से 25 दिसम्बर	2005	तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
26 से 28 दिसम्बर	2005	तक	पिम्परी (पूना)	020-27410487
29 दिसम्बर	2005	तक	उल्हासनगर	मो.-098290-14850, 094140-67850
30 दिस.से 6 जनवरी	2006	तक	मुम्बई, वार्षिकोत्सव	022-26057711, 26057579

तीज त्यौहार

16 अगस्त	05	मंगलवार	-	पुत्रदा पवित्रा एकादशी व्रत
19 अगस्त	05	शुक्रवार	-	रक्षाबन्धन, नारियल श्रावणी पूर्णिमा, सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्मोत्सव
21 अगस्त	05	रविवार	-	सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पुण्यतिथि
22 अगस्त	05	सोमवार	-	कजली तीज, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
26 अगस्त	05	शुक्रवार	-	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत(स्मार्त), थधिड़ी, बड़ी सतंह
27 अगस्त	05	शनिवार	-	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)
30 अगस्त	05	मंगलवार	-	श्रीअजा(जया) एकादशी व्रत, सद्गुरु हरिदासराम पुण्य तिथि दिवस
3 सितम्बर	05	शनिवार	-	कुशोत्पाटिनी अमावस्या
5 सितम्बर	05	सोमवार	-	चन्द्रदर्शन
6 सितम्बर	05	मगंलवार	-	हरितालिका तीज व्रत
7 सितम्बर	05	बुधवार	-	वैनायकी चतुर्थी व्रत, श्री गणेश जयन्ती
11 सितम्बर	05	रविवार	-	महालक्ष्मी व्रत शुरू, श्री राधाष्टमी
14 सितम्बर	05	बुधवार	-	जलझूलनी पद्मा एकादशी व्रत, डोल ग्यारस
17 सितम्बर	05	शनिवार	-	अनन्त चतुर्दशी, कन्या संक्रान्ति, पूर्णिमा व्रत
18 सितम्बर	05	रविवार	-	पूर्णिमा, पितृपक्ष (महालया) पितृतर्पण, श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ
21 सितम्बर	05	बुधवार	-	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
25 सितम्बर	05	रविवार	-	महालक्ष्मी व्रत
28 सितम्बर	05	बुधवार	-	एकादशी का श्राद्ध
29 सितम्बर	05	गुरुवार	-	इन्द्रा एकादशी व्रत, द्वादशी श्राद्ध

श्री अमरापुर धाम जयपुर में

ी कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव 27 अगस्त 2005 शनिवार

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 9.30 प्रार्थना-सत्संग-हवन-आरती

ायं 5 से 8 तक भजन संध्या-सत्संग-पाठों के भोग-आरती

रात्रि 12 बजे भगवान का जन्मोत्सव-आरती-खीरप्रसादी

र्शन समय प्रातः 6 से 12 व सायं 3 से रात्रि 12.30 बजे तक

सूरत में भी प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान

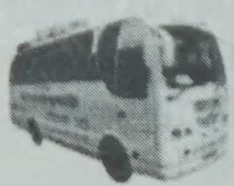
गुजरात के प्रमुख औद्योगिक महानगर सूरत में २६ मई को नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम के उद्घाटन अवसर पर हमारे सूरत के प्रतिनिधि श्री रमेश कुमार राजपाल जी ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान चलाकर सैकड़ों नये सदस्यों को सन्देश परिवार में शामिल किया. इस अवसर पर लकी ड्रा योजना में बने सदस्यों की रसीदों में से पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज के कर कमलों से चार पर्चियां निकालकर चार सदस्यों को दो से तीन ग्राम तक का सोने का ओम पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा दिया गया. भाग्यशाली विजेताओं के नाम व रसीद संख्या इस प्रकार है-१. रसीद संख्या:१७१८४- श्री गोरधनदास मेहरचन्दानी, सूरत २. १७१६०- दिव्या नरेश गोपवाणी, सूरत, ३. १७२४१- अशोक टेक्सटाईल्स, सूरत, ४. १७२७०- जीवतराम तलरेजा, सूरत

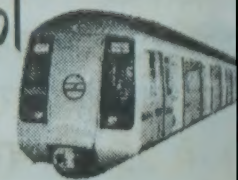




श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का





यात्रा कार्यक्रम

25 जुला.से 26 अग.	2005 तक		
27 से 28 अग.	2005 तक	प्रयागराज इलाहाबाद	0532-2655214
29 अग. से 1 सित.	2005 तक	वाराणसी बनारस	0542-2225585
2 से 3 सितम्बर	2005 तक	फैजाबाद अयोध्या	05278-246159
4 से 5 सितम्बर	2005 तक	लखनऊ	मो.-098290-14850, 094140-6785
6 से 9 सितम्बर	2005 तक	कानपुर	0512-2215747
10 से 11 सितम्बर	2005 तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
12 से 18 सितम्बर	2005 तक	दुबई	009714-3539815, 3531420
19 से 23 सितम्बर	2005 तक	चीन	
24 सित. से 2 अक्टू.	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
3 से 18 अक्टूबर	2005 तक	हरिद्वार, सांई सर्वानन्द जन्मो.	01334-260144, 260815
19 से 20 अक्टूबर	2005 तक	पिनगंवा	01268-279238, 279151
21 अक्टूबर	2005	हथीन	01275-261248, 261381
22 से 25 अक्टूबर	2005 तक	पलवल	मो.-098290-14850, 094140-6785
26 अक्टूबर	2005	दिल्ली	011-23859774, 55199138
27 अक्टूबर	2005	अहमदाबाद	079-22869816
28 से 29 अक्टूबर	2005 तक	पूना, स्वामी ग्वालानंद वर्सी	मो.-098290-14850, 094140-67850
30 अक्टू. से 3 नव.	2005 तक	जयपुर, दीपावली उत्सव	0141-2372423,2372424
4 से 6 नवम्बर	2005 तक	पूना, कार्तिकोत्सव	020-26350039
7 से 11 नवम्बर	2005 तक	जयपुर, गोपष्टमी कार्तिकोत्सव	0141-2372423,2372424
12 से 15 नवम्बर	2005 तक	कोटा	0744-2451476
16 से 18 नवम्बर	2005 तक	हिसार	01662-272049
19 नवम्बर	2005	दिल्ली	011-23859774, 55199138
20 से 24 नवम्बर	2005 तक	जकारता, मूर्ति स्थापना समारोह	006221-3807777, 0062816-18210
25 से 28 नवम्बर	2005 तक	दिल्ली, स्वामी जयप्रकाश वर्सी	011-23859774, 55199138
30 नवम्बर	2005	यात्रा	मो.-098290-14850, 094140-67850
1 दिसम्बर	2005	विजयवाड़ा	मो.-098290-14850, 094140-67850
2 से 5 दिसम्बर	2005 तक	चैन्नई (मद्रास)	मो.-098290-14850, 094140-67850
6 दिसम्बर	2005	यात्रा	मो.-098290-14850, 094140-67850
7 से 8 दिसम्बर	2005 तक	रामेश्वरम्	मो.-098290-14850, 094140-67850

सूचना : जयपुर प्रवास के समय मोबाइल बन्द रहेंगे.

आगे का यात्रा कार्यक्रम पेज 23 पर भी दे

महिमा राम नाम की

भगवान श्री कृष्ण के परम भक्तो में श्रेष्ठ अर्जुन है. अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से प्रश्न किया भगवन मुझे राम नाम की महिमा बताइये पहले तो भगवान स्वास्थ्य ठीक न होने का बहाना बनाकर टालते रहे. अर्जुन ने जब ज्यादा जोर दिया तो भगवान बोले तू देखना चाहता है या सुनना; अर्जुन बोले मुझे तो प्रत्यक्ष दिखाइये. .

भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से बोले– जा सामने वृक्ष पर एक कौए का जोड़ा रहता है "स्त्री कौए ने अभी–अभी अंडा दिया है तू उसके पास जाकर राम नाम की महिमा पूछना, वह तुझे बताएगा. अर्जुन शीघ्र ही उस पेड़ के पास गया. ऊपर उस घोसले में अंडा रखा था, अर्जुन ने अंडे से कहा– मुझे भगवान श्री कृष्ण ने आप से राम नाम की महिमा पूछने भेजा है, कृपा करके मुझे राम नाम की महिमा बताइये. जैसे ही अंडे के शरीर से राम नाम के उच्चारण का शब्द स्पर्श हुआ, अंडा वहाँ से लुढ़कता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा और टूट गया उसमें जो जीव था खत्म हो गया. अर्जुन तुरन्त भगवान के पास पहुंचा और उनको सारा समाचार सुनाया तब कृष्ण ने कहा कोई बात नहीं मुझे भी दुःख हुआ कि उस अंडे ने तुमको कुछ नहीं बताया. अच्छा अव तू सामने वाले घर में जा, वहाँ गाय ने बछड़े को जन्म दिया है तू उससे जाकर राम नाम की महिमा पूछकर आ. अर्जुन शीघ्र ही वहाँ गाय के बछड़े के पास जाकर जैसे ही राम नाम की महिमा पूछी– गाय का बछड़ा भी सुनते ही लुढ़क गया और मृत्यु को प्राप्त हुआ. अर्जुन ने उस घर से भागना ही उचित समझा, कहीं घर के मालिक ने देख लिया कि उसने हमारी गाय के बछड़े को मारा है तो मेरी पिटाई ही कर देगा. भगवान के पास आया और कहने लगा कि भगवान जिसके पास राम नाम का मन्त्र कहता हूँ वही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है. अब तो मैं किसी से पूछूंगा ही नहीं.. अगर रामनाम में ऐसा गुण था तो आपने कौरव पाण्डव युद्ध ही क्यों करवाया ? मै तो कौरव के कान में रामनाम का मन्त्र फूंकता जाता और कौरव मरते चले जाते.

भगवान ने सोचा अब अर्जुन अधिक परेशान हो गया है. इसलिए उसे पास के एक राजा के महल में भेजा और कहा कि इस राजा के एक पुत्र हुआ है जो गूंगा, बहरा और आँखो से अंधा है उसके पास तुम शीघ्र जाओ उससे पूछकर आओ.

भगवान अब तक तो आपने गाय का बछड़ा और कौए के जीव को मृत्यु दिलायी मैं बच गया लेकिन अगर राजा का लड़का मर गया तो राजा मुझे मृत्युदण्ड दिए बिना नहीं छोड़ेगा. भगवान ने कहा– यह बालक मरेगा नहीं बल्कि तुझे ज्ञान कराएगा. अर्जुन बोला बहरा, गूंगा और अन्धा जब देखेगा नही सुनेगा और बोलेगा भी नहीं फिर मुझे ज्ञान कैसे कराएगा. फिर भी आप आज्ञा देते हैं तो मैं आपका नाम लेकर जा रहा हूँ.

अब अर्जुन ने सारे शरीर पर भभूती लगा ली महात्माओ जैसा भेष बदलकर महल में पहुँचा और जोर से अलख निरंजन, अलख निरंजन का घोष किया. राजा बाहर आया महात्मा जी को देखकर महात्मा जी के चरणों में प्रणाम किया और सत्कार करना चाहा, तभी महात्मा जी बोले– मुझे तो आप अपने उस बालक के दर्शन कराएं, जो अभी–अभी पैदा हुआ है राजा अर्जुन रूप धारी महात्मा को लेकर महल में आये और रानी से राजकुमार को लेकर महात्मा की गोदी में दे दिया .

अर्जुन रूपधारी महात्मा बालक से बोले मैं तुझे गुरु मानता हूँ मुझे राम नाम की महिमा बता– यह सुनकर वालक तड़पने लगा अर्जुन घबड़ाने लगा और मन में सोचने लगा यहाँ भी भगवान ने अद्भुत लीला रचाई है. राजकुमार की ऑखों की रोशनी आ गयी, कानों से सुनाई देने लगा और अर्जुन से बोला अभी भी राम नाम की महिमा का तुझे ज्ञान न हो सका. तूने देखा– मैं अन्धा था ठीक हो गया बहरा था सुनने लगा और गूंगा था सो बोलने लगा कितनी बड़ी शक्ति है राम नाम में .

अब तू राज की बात सुन तुझे जिसने भेजा है वह घनश्याम है जिसे छोड़कर तू आया है वह श्री राम है और तू भी साधु नही अर्जुन है. अब मैं तुझे पिछले जन्म का वृतान्त सुनाता हूँ. मैने बड़े से बड़े पाप किए जिससे मुझे कौए का जन्म लेना पड़ा ,तूने राम नाम का उच्चारण किया मैं ऊपर से गिरा कौए की यौनि से छुटकारा मिला फिर भी पाप बाकी थे. जिससे गाय के बछड़े के रुप में जन्म लिया फिर तूने राम नाम का उच्चारण किया मैं गाय की योनी से भी मुक्त हो गया. परन्तु अभी भी मेरे पाप बाकी रह गये तो मुझे जन्म तो राजकुमार का मिला परन्तु अंधा, गूंगा और बहरा होकर जन्म लिया. मैं बड़ा दुखी हुआ परन्तु हे अर्जुन– तूने मेरे कानों में राम नाम का उच्चारण किया. मेरे सभी दुख दूर हो गये और मैं स्वस्थ बालक हो. गया "हे अर्जुन ऐसी अद्भुत शक्ति केवल राम नाम में ही है" अब अर्जुन राजा से विदा लेकर शीघ्र भगवान श्री कृष्ण के पास आये उनके चरणों में प्रणाम किया और कहा– भगवान आपकी लीला का कौन पार पा सकता है.

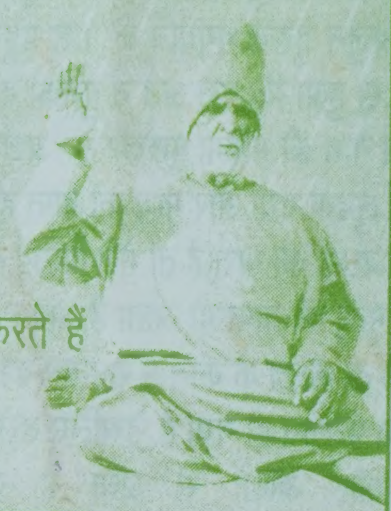
–ओमप्रकाश वलेचा, टूण्डला

डाक रजि. ग्वालियर संभाग – 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा.शा. – 29/18/81– II

पूज्य सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज की पावन स्मृति में

वन्दन-अभिनन्दन

सेवा कर्मणि संलग्नं, परे ब्रह्मणि संस्थितम् ।
श्री स्वामी शान्तिप्रकाशं, सद्गुरूं नित्यं नमामि ।।
वंदन करते हैं– करते हैं,
हम सब वंदन करते हैं– करते हैं,
जो सेवा का धर्म सिखाते,
कर्म धर्म का मर्म लखाते,
पतितों को भी पार लगाते,
उन कर्म योगी गुरुदेव,
स्वामी शांतिप्रकाश को हम सब वंदन करते हैं
हम सब वंदन करते हैं– करते हैं,
वन्दन करते हैं– करते हैं ।



गुंजित-काव्य

फूल चमन में खिल खिल जाए याद तुम्हारी जब जब आए
याद तुम्हारी आए ऐसे ज्यों सावन में चमके बिजली
पिड पिड बोले प्राण-पपीहा और जगाये सुधियां उजली
गगन घटाएं घिर घिर आए याद तुम्हारी जब जब आए
ओ मेरे वासन्तिक वैभव । कु हुक तुम्हारी अमृत घोले
महक तुम्हारी जादूगरनी इस मस्ती में तन मन डोले
सागर लहर लहर लहराए याद तुम्हारी जब जब आए
तुम मेरे प्राणों के मधुवन । मन माया गुंजार तुम्हारा
मन चीता सौंदर्य तुम्हारा मदिराया संसार तुम्हारा
मेरे मन में प्यार जगाए याद तुम्हारी जब जब आए
याद तुम्हारी बड़ी रसीली बड़ी रूपहली बड़ी रंगीली
तन लहकाये मन बहकाये याद तुम्हारी बड़ी नशीली
आंगन में शत दीप जलाए याद तुम्हारी जब जब आए ।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश कार्यालय से सज्जाकर रवि ऑफसेट, कम्पू, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया. फैक्स नम्बर- 0751-5045144(कार्यालय फोन सांय 4 से 8 –0751.5045144)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183

सूच[illegible]



समस्त सम्मा[illegible] के सूचनार्थ उ[illegible] के ऊपर सदस्य[illegible] संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है,शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना भी आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे अण्डरलाईन करके दी गई है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए. – व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

RH-6461-321'03-5/2006
CHANDERPRAKASH LALWANI
N.R.I. TAGORE LINE, DEVDI MODE,
HOUSE NO-73-213, MANSAROVER,
JAIPUR (RAJ.)